

ਨਵੋਦਯ

ਤਿਮਾਹੀ ਗ੍ਰਹ ਪਤ੍ਰਿਕਾ | ਅੰਕ-20 | ਅਕਤੂਬਰ-ਦਿਸੰਬਰ 2025

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਗਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫੁਲਦੀ



Navodaya

Quarterly House Journal | Addition -20 | October-December 2025



MEMORANDUM OF UNDERSTANDING



Bank proudly reaffirms its unwavering commitment to support the "Guardians of the Sea," the Indian Coast Guard by renewing the MoU for the ICG Salary Package for the next three years. The MoU was renewed in the presence of DIG Narendra Singh, TM, Principal Director, (Adm) and Shri Gopal Krishan (General Manager).

MoU with Himachal Road Transport Corporation (HRTC)



Bank signed MoU with Himachal Road Transport Corporation (HRTC) for Salary Accounts. The MoU was Signed in the presence of General Manager, Mr. Pawan Mahajan , Chief Accounts Officer and Financial Advisor, Mr. Manjeet Verma and Mr. Virender Verma , Sr. Accounts Officer, HRTC and Shri Chaman Lal Shienhmar (Field General Manager, Chandigarh) along with Shri Kuldip Singh (Zonal Manager, Chandigarh).

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

प्रधान कार्यालय, बैंक हाउस, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली - 110008

Head Office, Bank House, 21, Rajendra Place, New Delhi - 110008

ई-मेल/E-mail : editor.navodaya@psb.bank.in

वेबसाइट/website : www.punjabandsind.bank.in

मुख्य संरक्षक/Chief Custodian

श्री स्वरूप कुमार साहा

Shri Swarup Kumar Saha

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी / MD & CEO

संरक्षक / Custodian

श्री रवि मेहरा

Shri Ravi Mehra

कार्यपालक निदेशक / Executive Director

श्री राजीवा

Shri Rajeeva

कार्यपालक निदेशक / Executive Director

मुख्य संपादक / Chief Editor

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर

Shri Gajraj Devi Singh Thakur

महाप्रबंधक / General Manager

संपादक मंडल / Editorial Board

श्री राजेश चंदन पांडे

Shri Rajesh Chandan Pandey

मुख्य महाप्रबंधक / Chief General Manager

श्री निखिल शर्मा

Shri Nikhil Sharma

मुख्य प्रबंधक / Chief Manager

श्रीमती भारती

Smt. Bharati

प्रबंधक / Manager

पंजाब एण्ड सिंध बैंक गृह पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : जैना ऑफ़सेट प्रिंटरर्स

ए 33/2, साइट-4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया,

गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश

फ़ोन नं. : 98112 69844

ई-मेल: jainaoffsetprinters@gmail.com

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2	शुभकामनाएं एवं सुझाव	2
3	संपादकीय	3
4	Devising a Booster Dose for boosting India's Solar Rooftop Photovoltaic Systems Installations	4 - 5
5	समीक्षा बैठक(आंचलिक कार्यालय लखनऊ)	6
6	दिसंबर, 2025 को समाप्त तिमाही हेतु बैंक के वित्तीय परिणाम	7
7	दिनांक 31.12.2025 तक बैंक के आंचलिक कार्यालयों का कार्य-प्रदर्शन	8-9
8	NRI Exporter Meet	10
9	NRI Customer Meet at Gandhinagar	11
10	Digital Saftey is not a Luxury-It is as Essential as Locking your Door: An Indian Reality	12-14
11	समीक्षा बैठक(आंचलिक कार्यालय भोपाल)	15
12	भारतीय कृषि अतीत-वर्तमान एवं चुनौतियां	16-21
13	किसान दिवस	22-23
14	Master the art of living light	24-26
15	क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, मुंबई के नवीन परिसर का उद्घाटन	27
16	Veer Bal Diwas : When Courage Wore the Face of Children	28-30
17	Kisan Credit Card : lifeline of farm credit	31-32
18	नवीन अनिवासी भारतीय शाखा माधापार, गुजरात का शुभारंभ	33
19	अनिवासी भारतीय ग्राहक सम्मेलन	34-35
20	17th CKYC Record Registry Awareness Programme	36
21	Digital Life Certificate Campaign	36
22	साइबर आतंकवाद	37-39
23	MoU signed wih BSF	40
24	Entrepreneurship Awareness Programme	40
25	सतर्कता जागरूकता सप्ताह	41
26	Important Circular from 01.10.2025-31.12.2025	42-43
27	Happy Momments with Winter Carnival	44

शुभकामनाएं एवं सुझाव / Letter to the Editor

I recently had the opportunity to read Navodaya and felt encouraged to share a few reflections as a reader engaging closely with the magazine. One article that stood out for its relevance and clarity was the piece on cyber security and the customer's role. What made it particularly effective was its practical approach. The article translated a complex subject into clear, actionable awareness, highlighting everyday digital risks while emphasising the customer's role in prevention. It read as guidance meant to protect, not merely inform. The inclusion of the poem "Heart Ties" offered a thoughtful contrast within the issue. Its quiet, reflective tone provided a pause amid articles focused on systems and processes, adding a human dimension to the magazine's overall narrative. As Editor, you have brought together content that feels intentional rather than assembled. The magazine reflects balance, restraint, and clarity, and respects the reader's intelligence by presenting progress with context and responsibility.

As a first-time reader, I found Navodaya to be engaging, relevant, and thoughtfully curated. I look forward to reading future editions.



Sunint Kaur
Clinical Therapist,
Nutritionist and Personality Strategist

बैंक की गृह-पत्रिका "नवोदय" का अंक नियमित रूप से मिल रहा है, धन्यवाद। आपके कुशल संपादन में हर बार की तरह इस बार गृह-पत्रिका का यह अंक भी संग्रहणीय बन पड़ा है। बैंकिंग क्षेत्र में अपने बैंक की गतिविधियों को आपने सुंदर छाया-चित्रों से सुसज्जित करके इसे पत्रिका को दर्शनीय व पठनीय बना दिया है। पत्रिका में प्रकाशित लगभग सभी लेख बेहद स्तरीय एवं सुरुचिपूर्ण हैं। पत्रिका की लोकप्रियता में दिन-ब-दिन बढ़ोतरी हो रही है इसका श्रेय आपकी देख-रेख में कार्य कर रहे संपादक मंडल को जाता है। पत्रिका व बैंक के चहुँमुखी विकास की कामना है। दिन दूनी-रात चौगुनी प्रगति व विकास के लिए ढेरों शुभकामनाएं।

आपका,



डॉ. चरनजीत सिंह
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक

बैंक की तिमाही गृह पत्रिका "नवोदय" का ये अंक पिछले अंकों की भांति ही निर्विवाद रूप से वर्तमान समय की नई एवं प्रासंगिक परिकल्पनाओं का सर्वश्रेष्ठ संकलन है जोकि अति सराहनीय है। "नवोदय" अपने नाम कि भांति ही नई विषयवस्तुओं का संग्रह अपने अंदर समाहित किए हुए है जिससे ये सुदृढ़ और सुसज्जित प्रतीत होती है। पत्रिका में प्रकाशित विविध विषयगत सामग्री मानसिक स्वास्थ्य, जोखिम और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे विषयों पर ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान कर कार्मिकों को सकारात्मक सोच एवं नवाचार कि दिशा में भी प्रेरित कर रही है। बैंक द्वारा इस प्रकार की पहल सराहनीय है जो ज्ञानवर्धन करने के साथ-साथ बैंकिंग संस्कृति को भी समृद्ध करती है। पत्रिका की गुणवत्ता और विषयवस्तु तथा साज-सज्जा अत्यंत सराहनीय है। यह पत्रिका अपने प्रकाशन के आरंभ से ही अपने विशेष पाठक-समूह के लिए आकर्षक एवं पठनीय रही है। बैंक की यह पत्रिका न सिर्फ बैंकिंग संबंधी आलेख को ही प्रकाशित कर रही है बल्कि इसमें जीवन के विविध पहलू विज्ञान-तकनीक एवं अन्य प्रासंगिक विषयों पर भी गंभीर एवं सारगर्भित लेख प्रकाशित होते हैं। इस पत्रिका में बैंक की विविध महत्वपूर्ण सूचनाएँ संकलित हैं। अतः एक पठनीय ज्ञानवर्धक एवं विविधतापूर्ण पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं पूरी संपादक टीम को हार्दिक बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।



अविनाश कुमार तिवारी
आंचलिक प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, जयपुर



संपादकीय

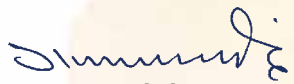
प्रिय साथियो,

आप सभी के साथ यह साझा करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि समस्त कार्मिकों के अथक प्रयासों एवं प्रबंधन की रणनीतिक पहलों के माध्यम से इस तिमाही में बैंक के कार्यप्रदर्शन में शानदार बढ़ोतरी हुई है। इसलिए, किसी भी संस्था के कार्मिक उसकी रीढ़ के समान है, उनके प्रयासों के बिना लक्ष्यों को प्राप्त करना संभव नहीं। कार्मिकों का उत्साहवर्धक बने रहना आवश्यक हैं। हमें देश के मेहनत किसानों की लगन, उत्साह एवं संघर्ष से प्रेरणा लेने का प्रयास करना चाहिए। चाहे कितनी बाधाएं या विपत्तियां मार्ग में क्यों न आए, देश का किसान अपने फटे हाथों, धूप में तपती पीठ और बारिश की मार झेलकर भी मिट्टी से सोना उगलता है। "जय जवान, जय किसान"—यह नारा केवल शब्दों का मेल नहीं, बल्कि हमारे राष्ट्र के अस्तित्व का आधार है। इसी सम्मान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाते हुए, हमारे बैंक द्वारा किसानों की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वित्तपोषण योजनाएं नियोजित की गई हैं जिनमें, पीएसबी कृषक रथ, पीएसबी कृषि स्वर्ण क्रांति, पीएसबी किसान तत्काल योजना, कृषि उद्देश्य के लिए भूमि क्रय हेतु किसानों के वित्तपोषण हेतु पीएसबी योजना, पीएसबी उद्यान योजना आदि सम्मिलित हैं। किसानों की मेहनत, उसके धैर्य और मिट्टी के प्रति अटूट समर्पण को दिखाता है। अतः देश के किसानों से मेहनत और संघर्ष सीखने के साथ ही यह ज़रूरी है कि हम इनका सम्मान स्वयं तो करें ही और दूसरों को भी ऐसा करने हेतु प्रेरित करें। मुझे आशा है कि आप सभी का इसी प्रकार का समर्पण भाव बैंक को आगामी तिमाही में भी प्रगति की ओर अग्रसर कर, नए स्तंभ को स्थापित करेगा।

फटी हथेली, तपती धूप, कांधे पर हलधर वो चलता है,
मिट्टी की सौंधी खुशबू में, देश का भाग्य बदलता है।
जिसके माथे के पसीने से, धरती प्यास बुझाती है,
उसकी मेहनत की गाथा तो, खुद कुदरत ही गाती है।

गृह पत्रिका नवोदय भी इस दिशा में कार्य कर रही है। गृह पत्रिका नवोदय हमारे विचारों और अनुभवों को दूसरों तक जोड़ने का एक साझा प्रयास है। पत्रिका के इस अंक में नवाचार संबंधी लेखों एवं बैंक की पहलों को महत्वपूर्ण रूप से सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं रोचक लेख एवं समसामयिक विषय आधारित सृजनात्मक रचना को भी समाहित किया जाता है। इसके अतिरिक्त गृह पत्रिका नवोदय के इस अंक में मुख्य रूप से बैंक में आयोजित विभिन्न गतिविधियों, बैंक के विभिन्न उत्पादों, नीतियों, महत्वपूर्ण परिपत्रों सहित भारतीय कृषि अतीत-वर्तमान एवं चुनौतियां, Master the art of living light, Digital Safety is not a Luxury-It is as Essential as Locking your Door: An Indian Reality आदि लेख भी समाहित किए गए हैं, जो हमारी जानकारी को पोषित करते हैं। इसलिए आप सभी अपने विचारों को पत्रिका के माध्यम से साझा करते रहें।

मुझे विश्वास है कि आप इसे उपयोगी और सूचनाप्रद पाएंगे। बैंकिंग के विविध पहलुओं को समेटे यह पत्रिका आपको कैसी लगी, इसके अनवरत सुधार की दिशा में आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझावों का हमें सदैव इंतजार रहेगा।


(गजराज देवी सिंह ठाकुर)
महाप्रबंधक एवं मुख्य संपादक

Devising a Booster Dose for boosting India's Solar Rooftop Photovoltaic Systems Installations



Sankalp Sahu

Subsequent to the implementation of PM Surya Ghar (PMSG): Muft Bijli Yojana during February 2024, though there has been a significant growth of India's Solar Rooftop Photovoltaic (RTPV) Systems installations but the same can't be termed satisfactory. As per the data published by Press Information Bureau (PIB) during December 2025, India's total solar capacity has clicked the mark of 129 GW by end of 2025 from a meagre 3 GW during 2014. However, in this article I would like to confine the topic only to household RTPV systems. As per the PMSG, the target has been set for one crore RTPV household installations by March 2027 having a capacity of 30GW. Interestingly, we have achieved 29.3 lakhs household RTPV installations with a capacity of 7 GW by end of 2025. The leading states in installing the systems are Rajasthan, Maharashtra, Gujarat, and Tamil Nadu.

India faces a substantial green financing shortfall, needing hundreds of billions of dollars annually (more than \$68bn for renewables alone) to meet its 2030 targets, yet attracting only a fraction of that, creating a gap for net-zero goals, driven by high capital costs, risks in emerging markets, and long project gestation periods, despite government initiatives and growing domestic markets. Key barriers include perceived investor risk, misalignment of investor expectations with long project timelines, and the sheer scale of capital needed for sectors like steel and cement, requiring innovative finance and policy support.

THE SCALE OF THE SHORTFALL :

- ◆ Renewables Gap: To reach 500 GW of non-fossil energy by 2030, India needs around \$68 billion annually, but attracted only about \$13 billion in 2024.
- ◆ Net-Zero Targets: Overall climate investment needs are estimated at \$1.3 trillion by 2030, with a potential \$3.5 trillion shortfall for net-zero by 2070, according to Council on Energy, Environment and Water (CEEW).

- ◆ Transition Finance: Decarbonizing heavy industries like steel and cement alone requires significant capital, around \$650 billion for transition.

GOI had recently introduced a new kind of debt instrument in the market named as sovereign green bonds. But it hasn't gained much traction amongst the investors as we have seen the tranches being repeatedly cancelled because of undersubscription. Well it was destined to get such lukewarm response, especially when the investors were apprehending that the yield aka greenium is lesser than other conventional financial instruments available in the market.

Thus, what do we make out of these observations. People are simply not going to donate for environmental conservation. We need to provide them some options where they feel comfortable like gaining significantly while simultaneously contributing to the climate cause. One initiative where the GOI had gained some good response is the PM SURYAGHAR SCHEME. It is a rooftop solar plant scheme, where GOI and the respective state governments provide subsidy to the subscriber for installing the solar energy systems.

Still then I would say that this scheme hasn't achieved even 5% of its true subscription that it deserves. It can go viral if the GOI could provide some new and innovative incentives and options to the common public in this scheme.

Despite the introduction of the rooftop solar scheme, a lot of people who can afford it, are also fascinated by the idea of generating free electricity at their homes, but are still reluctant to install these solar plants at their homes, mainly because of the apprehension of maintenance problems, damage by storms etc. This is a common concern in my native place Odisha, which has tied the nuptial knot with devastating cyclones for eternity. So as the case with many costal states like Telangana, Andhra Pradesh, Tamil Nadu. Needless to say

that such states, due to their geographical position, happen to be the states getting enough sun shine during most of the months throughout the year. These states have huge potential for solar energy but it isn't being tapped yet to the fullest.

The per capita income of Amritsar and Bhubaneswar are more or less similar, still it has much lesser rooftop solar plants. Thus, I finally zeroed down to only one possible explanation after talking to a few people of different socio-economic sections in my place (here, let me clarify that it was not formal research, rather an informal overview of the present situation). I learnt that people in my area too are interested to invest in such schemes, but only if someone could take the responsibility of maintenance and provide insurance against storms, they would have invested in such schemes. My own informal ground observations are well corroborated by the data published by the GOI's Niti Aayog, which says that the solar potential of Odisha is 15 times higher than that of Punjab. However, when it comes to actual installations and generations of power then Punjab generated double that of Odisha. The following table would give a clear picture of the fact.

State	Solar Potential (GW)	Solar Energy Generation (MW)
Punjab	9.21	1427
Odisha	139.47	706

Note : The above data is as on 11.01.2026, as per Niti Aayog Portal, webpage address provided at the end of the article.

Such contradictions can be found in many other states across India, where those states have lagged behind significantly in tapping into the renewable natural resources that they have. However, the above data of two states clearly shows how big a difference can be created when people practically start contributing in the efforts of the GOI.

So to counter this problem, it can be thought of introducing a new type solar project scheme, where those households that are interested to reap the benefits of free electricity, they could be asked to make a lumpsum one-time payment or EMI which the GOI can use to fund their renewable energy projects and generate more green energy and in return this extra green electricity generated can be passed onto these households, upto a particular limit for a predefined period, as per their contribution in the scheme. Apart from that encouragement may be provided for unemployed youths to make start-ups for maintenance of rooftop solar systems. Undoubtedly that

would open up enough employment avenues. Apart from this, the Insurance Sector may be engaged for making suitable in-built mandatory schemes for the people opting for Rooftop Solar Systems, which would safeguard the apprehension of financial loss on account of natural calamities.

Now in many places it is the private discoms that are providing electricity to the houses. So no problem there too. The private discoms are also in need of funds for funding their renewable projects. In such cases GOI can think of rewarding those private companies in the form of Green Credits for every additional subscription they garner. The think tank can do the math and set an MRP for each area. It will be a price above which no one can sell the scheme. This needs to be done to prevent exploitation by the private discoms, so that they don't charge exorbitantly high charges.

This scheme can function as one of those very few deals where both the parties will feel benefitted symbiotically. I believe if this system is implemented then the GOI won't also need to give the artificial respirations in the form of subsidy and the people will still be ready to subscribe to such scheme. By doing such things the GOI can completely transfer the onus of climate conservation onto the citizens. Our GOI has been running various financial inclusion programs, because of which people are, on their own, willing to integrate with the BFSI sector because they find value in it. Similarly, this concept can set the ball rolling for "climate inclusion", where people will be ready to contribute to the climate cause, because they will be simultaneously benefitting from it. Moreover, this idea is in line with the ideology of our current GOI, who believes in facilitating businesses rather than doing the business themself.

In this article I have tried to share few ideas, However the real fruits can be harvested when all important stakeholders, the think tanks of the society, the "Buddhijeevis" look into this idea and discuss about its feasibility. It would be delight for me to receive critical comments, deeper thoughts from the esteemed readers through email, with regard to feasibility of this concept. Needless to mention that, the sole perspective of this article is to devise an innovative prototype solution that could work as an antibiotic in boosting a sustainable Rooftop Solar Photovoltaic System installation, while paving the path for a greener planet simultaneously. .

Officer
BO Ashok Nagar, Bhubaneswar

समीक्षा बैठक

श्री स्वरूप कुमार साह (प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी) एवं श्री अवधेश नारायण सिंह (आंचलिक प्रबंधक, लखनऊ) की उपस्थिति में आंचलिक कार्यालय लखनऊ में शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।



दिसम्बर 2025 को समाप्त तिमाही हेतु बैंक के वित्तीय परिणाम

राशि करोड़ में

मानक	तृतीय तिमाही वित्त वर्ष 2024-25	तृतीय तिमाही वित्त वर्ष 2025-26	वार्षिक विकास-दर
परिचालन लाभ (करोड़ में)	484	594	110
शुद्ध लाभ (करोड़ में)	282	326	44
परिसंपत्ति पर प्राप्ति (आरओए) %	0.73	0.79	6 बीपीएस
लाभांश (आरओई) %	12.42	11.71	(71) बीपीएस
अग्रिम उपज (वर्ष-दर-वर्ष) %	9.14	8.39	(75) बीपीएस
लागत-आय-अनुपात %	62.1	60.21	(189) बीपीएस
गैर ब्याज आय (करोड़ में)	338	507	169
ऋण-जमा अनुपात	75.25	79.24	399 बीपीएस
स्लीपेज अनुपात (12एम)	0.34	0.16	(18) बीपीएस
सकल गैर निष्पादित आस्ति (%)	3.83	2.60	(123) बीपीएस
निवल गैर निष्पादित आस्ति (%)	1.25	0.74	(51) बीपीएस
वसूली एवं उन्नयन (करोड़ में)	565	484	-81
ऋण लागत (12एम)	0.10	0.05	5 बीपीएस
निवल ब्याज मार्जिन %	2.78	2.59	(19) बीपीएस
कासा जमा	39701	43187	3486
कुल जमा	127397	139202	11805
सकल अग्रिम	95870	110297	14427
कुल व्यापार	223267	249499	26232

दिनांकित 31.12.2025 तक आंचलिक

राशि करोड़ में

आंचलिक कार्यालय	कोर जमा			सकल जमा			कासा		
	दिसंबर, 24	दिसंबर, 25		दिसंबर, 24	दिसंबर, 25		दिसंबर, 24	दिसंबर, 25	
		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि
आगरा	2,091	2,437	2,424	2,641	3,019	2,808	938	1,158	1,083
अमृतसर	4,706	5,246	5,187	5,052	5,681	5,374	1,926	2,087	2,062
बरेली	2,215	2,523	2,364	2,388	2,813	2,530	1,441	1,621	1,480
बठिंडा	2,687	2,920	2,909	2,725	2,964	2,940	1,267	1,318	1,332
भोपाल	2,539	2,999	2,987	3,179	3,774	3,689	1,041	1,286	1,111
चंडीगढ़	6,624	7,869	7,239	8,054	9,555	8,191	2,636	3,422	2,780
चैत्रे	1,111	1,218	1,573	2,060	2,303	3,004	550	585	835
देहरादून	2,688	3,173	3,003	3,029	3,641	3,216	1,228	1,469	1,255
दिल्ली - I (एलसीबी के अतिरिक्त)	5,842	6,538	6,609	8,134	9,523	10,266	2,026	2,190	1,959
दिल्ली - II	7,878	8,715	8,512	9,482	10,583	9,935	2,933	3,188	2,819
फरीदकोट	1,874	2,091	2,107	1,899	2,127	2,127	851	905	917
गांधीनगर	594	674	1,074	1,514	1,481	1,792	226	257	310
गुरदासपुर	4,054	4,540	4,565	4,113	4,605	4,620	1,812	1,960	2,018
गुरुग्राम	2,028	2,298	2,262	2,385	2,741	2,546	916	1,033	968
गुवाहाटी	1,486	1,987	1,731	1,616	2,156	1,870	810	1,220	966
होशियारपुर	5,140	5,801	5,821	5,155	5,823	5,821	2,141	2,347	2,388
जयपुर	2,014	2,151	2,052	2,545	2,897	2,571	890	883	808
जालंधर	6,899	7,676	7,574	6,982	7,834	7,702	2,661	2,884	2,848
कोलकाता	2,214	2,546	2,367	3,773	4,026	3,394	772	942	800
लखनऊ	1,913	2,220	2,562	2,960	3,496	3,611	898	1,066	1,061
लुधियाना	4,817	5,364	5,393	5,482	6,198	5,723	2,117	2,271	2,139
मोगा	3,421	3,744	3,824	3,428	3,761	3,834	1,671	1,717	1,796
मुंबई (एलसीबी के अतिरिक्त)	2,300	2,628	3,131	2,808	3,294	3,560	852	930	1,275
नोएडा	3,978	4,646	4,828	5,107	5,358	5,571	1,924	2,264	2,190
पंचकूला	3,276	3,725	3,625	3,745	4,300	4,359	1,492	1,675	1,644
पटियाला	3,929	4,297	4,234	3,981	4,420	4,302	1,478	1,538	1,568
पटना	1,424	1,676	1,778	2,069	2,378	2,179	645	772	850
वाराणसी	1,080	1,276	1,230	1,191	1,421	1,279	516	632	583
विजयवाड़ा	1,568	1,757	2,348	4,510	5,020	5,845	715	855	865
एलसीबी दिल्ली	402	426	424	4,461	4,436	3,096	89	125	150
एलसीबी मुंबई	304	489	621	10,928	4,149	11,425	236	417	310
कुल*	93,097	105,649	106,355	127,394	135,777	139,180	39,700	45,017	43,167

*को-लेंडिंग, ट्रेड तथा सेमवर्ट के अतिरिक्त

कार्यालयों का कार्य प्रदर्शन

राशि करोड़ में

आंचलिक कार्यालय	खुदरा अग्रिम			कृषि अग्रिम			सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम अग्रिम			गैर निष्पादित आस्तियाँ		
	दिसंबर, 24	दिसंबर, 25		दिसंबर, 24	दिसंबर, 25		दिसंबर, 24	दिसंबर, 25		दिसंबर, 24	दिसंबर, 25	
		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि		लक्ष्य	उपलब्धि
आगरा	487	615	585	62	120	103	445	550	466	104	79	93
अमृतसर	700	860	773	544	670	596	308	410	333	95	68	93
बरेली	368	475	410	1,441	1,670	1,605	637	730	559	253	199	262
बठिंडा	424	530	514	1,151	1,410	1,347	310	415	294	80	65	67
भोपाल	437	610	575	215	390	326	806	1,085	1,176	96	70	80
चंडीगढ़	1,362	1,640	1,553	329	440	387	817	945	912	139	66	62
चैत्रे	684	865	811	119	175	107	492	660	537	99	68	70
देहरादून	468	600	550	213	270	213	424	560	447	53	45	55
दिल्ली - I (एलसीबी के अतिरिक्त)	882	1,110	1,039	46	75	50	1,151	1,280	1,261	114	57	58
दिल्ली - II	1,007	1,235	1,193	93	185	165	1,987	915	877	44	32	24
फरीदकोट	249	325	299	763	970	914	184	285	209	75	58	67
गांधीनगर	313	465	428	81	165	143	383	570	565	68	46	44
गुरदासपुर	421	535	492	690	845	784	368	480	390	152	113	123
गुरुग्राम	788	990	940	327	410	374	368	500	475	45	35	40
गुवाहाटी	323	405	392	18	70	42	259	375	316	25	18	24
होशियारपुर	425	535	508	599	745	692	175	275	212	74	59	69
जयपुर	756	915	846	734	870	816	666	765	702	157	120	139
जालंधर	583	710	674	328	455	368	426	540	487	89	75	79
कोलकाता	451	585	513	155	230	294	687	835	706	296	182	213
लखनऊ	431	550	513	150	220	217	464	615	555	114	86	106
लुधियाना	545	680	637	631	800	740	662	830	709	166	125	139
मोगा	278	365	334	975	1,175	1,109	192	270	214	89	73	93
मुम्बई(एलसीबी के अतिरिक्त)	684	785	787	83	225	178	930	715	702	95	72	76
नोएडा	898	1,110	1,099	395	490	438	473	615	584	109	82	104
पंचकूला	563	700	660	627	770	712	436	535	453	133	101	112
पटियाला	569	710	662	913	1,130	1,121	483	580	425	94	68	78
पटना	337	440	430	36	95	71	399	530	502	71	54	72
वाराणसी	223	280	265	83	145	119	267	370	300	80	55	71
विजयवाड़ा	736	950	894	91	285	251	509	765	773	74	47	47
एलसीबी दिल्ली	36	45	32	18	28	16	164	235	396	1	29	34
एलसीबी मुम्बई	3	7	2	988	10	710	352	236	104	0	-	6
कुल*	16,433	20,628	19,410	12,897	15,537	15,009	16,221	18,471	16,641	3,083	2,247	2,599

*को-लेंडिंग, ट्रेड तथा सेमवर्ट के अतिरिक्त

NRI EXPORTER MEET



In the presence of Shri Rajeeva (Executive Director), Shri Vinod Kumar Pandey (Field General Manager, Mumbai), Shri Sanjay Prakash Srivastava (General Manager), Ms. Mahima Agarwal (General Manager) an Exporters' Meet was organized by the Zonal Office Gandhinagar. Our valuable customers share their feedback with our higher officials and they were also felicitated by the bank.

NRI CUSTOMER MEET AT GANDHINAGAR



Non-Resident Indian Meet was Organized by Zonal Office Gandhinagar. The Meeting was graced by Shri Rajeeva (Executive Director), Shri Vinod Kumar Pandey (Field General Manager), Shri Sanjay Prakash Srivastava (General Manager), Ms. Mahima Agarwal (General Manager) along with Rajesh Malhotra, Zonal Manager, Gandhinagar with our Esteemed Customers.

Digital Safety Is Not a Luxury — It Is as Essential as Locking Your Door: An Indian Reality



Vikas Chauhan

A decade ago, many of us could not imagine paying for a cup of tea with a quick scan of a QR code or sending money to a family member hundreds of kilometers away in seconds. Yet today, this has become routine — from Bengaluru’s busy tech corridors to the narrow lanes of small towns in Bihar, from corporate offices in Gurgaon to farms in Punjab. India has not just adopted digital services; we live in them now.

But with this convenience comes a powerful truth: digital safety is no longer something “extra” or “optional.” It is as essential as fastening a seatbelt or locking your main gate at night. It protects your identity, your earnings, and the trust you place in technology every day.

Affordable smartphones, low-cost mobile data, and strong digital infrastructure have opened the online world to nearly every Indian. What was once limited to cities is now part of life in villages as well. Despite this progress, one thing remains uneven — digital awareness. In large cities, technology blends into every activity — food ordering, cab bookings, tap-and-go payments, online shopping, banking apps, and subscription services. Scams here tend to be clever, often involving fake delivery messages, forged apps, or deepfake voice calls.

In rural and semi-urban regions, digital use often begins with necessities — government schemes, pension transfers, agricultural payments, or family remittances. Scams usually take simpler forms: fake KYC calls, deceitful customer-care numbers, or someone pretending to be a bank employee.

The contrast is clear — different lifestyles, different methods of fraud, but the same risk: financial loss.

WHY DIGITAL SAFETY CANNOT WAIT

Many people still believe digital fraud happens only to those who are inexperienced or careless. But fraud does



not judge education, age, or income.

- ◆ A bank manager can click on a clever phishing link.
- ◆ A student may forward a fake job application form.
- ◆ A farmer might reveal OTP information over a call, trusting the stranger to help.

All it takes is one moment of urgency, one misleading link, one slip in judgment — and hard-earned money disappears within minutes. This is why digital safety is a responsibility, not a choice. In today’s India, staying alert online is as necessary as looking both ways before crossing a busy road.

THE NEW FACE OF FRAUD AND THE NEW DEFENSE: ARTIFICIAL INTELLIGENCE

Fraudsters are no longer sending poorly written scam messages. Many now use Artificial Intelligence (AI) to sound real, look real, and behave like someone trustworthy.

- ◆ They can imitate voices of relatives or bank officials,
- ◆ create fake videos using deepfakes,
- ◆ write convincing messages in regional languages,
- ◆ clone websites and apps that look identical to genuine ones.

However, AI is not just in their hands. AI is also becoming our strongest guard.

Banks, payment platforms, and telecom operators are weaving AI into security systems to stop fraud in real time.

HOW AI PROTECTS USERS PRACTICAL TOOLS IN ACTION

1. Transaction Behavior Monitoring

Everyone has a natural way of using money. AI systems study your typical transaction patterns — amounts, timings, frequency, and location. If something unusual happens, like:

- ◆ a late-night transfer of a large amount,
- ◆ payments from a city you have never visited,
- ◆ repeated failed attempts at login,

AI can pause or block the payment and alert you (like Mule Hunter AI)

2. Voice and Deepfake Detection

As voice imitation becomes common, banks are adding systems that analyze tone and speech patterns, check if the caller's voice is real-time or recorded, and identify signs of deepfake audio.

3. Fraud Call Filtering

Telecom companies are testing AI filters that can detect scam-related calling behavior, block suspicious numbers before they reach you, and flash warnings if a caller's history is doubtful.

4. Safer UPI Transactions

AI now helps UPI systems detect fake apps, verify QR codes, identify strange payment patterns, and flag risky accounts.



5. Local-Language Digital Safety Learning

AI-powered learning platforms now explain digital safety in simple languages — Hindi, Haryanvi, Bengali, Tamil, Marathi, Bhojpuri, and more.

6. Browser & App Safety Tools

AI-driven extensions can warn users if a website looks suspicious or a download may contain malware.

7. QR Code Verification

AI scanners verify whether QR codes match a recognized account or have been tampered with.

METRO OR VILLAGE THE THREAT IS DIFFERENT, THE SOLUTION IS SHARED

No matter where we live, we are only a few careless seconds away from being cheated.

Everyday Digital Habits That Keep You Safe

- ◆ Never share OTP or PIN — with anyone.
- ◆ Download apps only from official stores — not forwarded links.
- ◆ Search for customer-care numbers on verified websites only.
- ◆ Remember: QR codes usually receive money — not send it.
- ◆ Take a breath before clicking any link — urgency is a trap.
- ◆ Enable biometric locks and two-factor authentication where possible.
- ◆ If something feels “too sudden,” pause — authentic requests rarely demand instant action.



DIGITAL SAFETY IS THE MODERN SEATBELT

You don't wear a seatbelt because you expect an accident in every journey. You wear it because your life matters. Digital Safety is an Everyday Habit, digital safety does not belong to any class, region, or income level. It belongs to everyone who uses a phone.

Digital safety is not technical, it is thoughtful. AI can assist you but awareness must come from you.

India's future is digital and the strength of that future depends on how wisely we protect ourselves today.

EXAMPLE: WHEN AWARENESS SAVED LAKSHMI - A STORY FROM RURAL TO METRO INDIA

Lakshmi Devi, a 48-year-old woman from a small village in Uttar Pradesh, never imagined that a simple smartphone would become both her biggest risk and her strongest shield. Her son Rohan, who worked in Delhi, gifted her a smartphone so she could stay connected with family through video calls and WhatsApp. Lakshmi gradually started using online banking to receive subsidies, pay bills, and recharge her phone. Life became easier, but she did not realize that the digital world demanded more than convenience — it demanded constant awareness.

One afternoon, Lakshmi received a message saying her bank account would be blocked unless she updated her KYC. The message looked official, had a logo, and even mentioned the correct branch name. Curious and scared of losing access to money, she clicked the link. A form opened, asking her to enter her Aadhaar number, OTP, and ATM PIN. She almost typed everything, but something held her back. Only a week earlier, her village school hosted a digital-safety awareness camp where a trainer explained, "The bank never asks for OTP or ATM PIN. If someone does, it is a fraud." Those words echoed in Lakshmi's mind.

Instead of entering the details, she called her son Rohan in Delhi. Rohan checked the message through an AI-powered fraud-analysis app he had installed — the app flagged the link as a phishing scam, highlighting that similar messages had been reported hundreds of times. Within seconds, Lakshmi understood she had narrowly escaped losing her lifelong savings. She discussed the incident with her local women's self-help group, and soon everyone learned how such scams targeted people — especially those newly familiar with smartphones.

Meanwhile in Delhi, Rohan shared the experience at his office. His workplace used AI-based payment verification tools that scanned QR codes to detect tampered or malicious links — a crucial safeguard as cyber-criminals increasingly replaced real QR codes with fake ones at shops and metro stations. One of Rohan's colleagues recalled how his mother lost ₹25,000 after scanning a fake UPI QR code at a petrol pump. The fraudsters vanished before the police could track them.

Hearing Lakshmi's story, Rohan helped his entire neighbourhood install digital-safety tools:

- ◆ AI spam-call filters to detect fraud voice calls
- ◆ OTP-reading protection apps to prevent auto-forwarding of codes
- ◆ Secure UPI scanners that verify merchant IDs
- ◆ Password managers with encryption to avoid weak or repeated passwords

Within months, awareness spread from a single village lane to a whole community. People who once feared smartphones began using them with confidence and caution. Lakshmi became known as "digital didi", often reminding neighbors, "Technology is like a knife. It can cut vegetables or cause injury — it depends on how carefully we use it."

Her journey proves a simple truth: digital safety is not a luxury reserved for cities — it is a necessity for every Indian, whether living in a metro station apartment or a mud-brick village home. Awareness, combined with the right technology, can turn a vulnerable user into a confident defender of their own digital world.

Senior Manager
BO Rewari

समीक्षा बैठक

श्री रवि मेहरा (कार्यपालक निदेशक) एवं श्री ताराचंद मीणा (आंचलिक प्रबंधक, भोपाल) की उपस्थिति में आंचलिक कार्यालय भोपाल में शाखा प्रबंधकों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया।



भारतीय कृषि अतीत-वर्तमान एवं चुनौतियां



अमित भारतद्वज

भारत में कृषि एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो देश की अर्थव्यवस्था को आधार प्रदान करता है और लाखों लोगों की आजीविका को समर्थन प्रदान करता है। कृषि क्षेत्र, उद्योग, भोजन और फाइबर प्रदान करता है साथ ही रोजगार, सांस्कृतिक प्रथाओं और सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत प्राचीन काल से ही कृषि प्रधान देश रहा है जिससे देश की लगभग 42.3 प्रतिशत आबादी आजीविका प्राप्त करती है। नवीनतम आकड़ों के अनुसार कृषि देश की जीडीपी में 18.2 प्रतिशत की भागीदारी देती है

भारत में लगभग 159.7 मिलियन हेक्टेयर भूमि कृषि योग्य है जो दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है जो कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 53 प्रतिशत है। कृषि के लिये उपयुक्त भूमि कृषि योग्य भूमि कहलाती है, इसकी विशेषता उपजाऊ भूमि, जल और नियमित फसल उत्पादन (अनाज, सब्जियां और फल सहित) को बनाये रखने की क्षमता है

कृषि क्षेत्र भौगोलिक परिस्थितियों और मौसम परिवर्तन से प्रभावित होती है भौगोलिक परिस्थिति के अनुसार कृषि भूमि का वर्गीकरण मुख्य रूप से जल उपलब्धता, वर्षा आधारित, बागवानी भूमि, परती भूमि तथा जलवायु के आधार पर किया जाता है तो दूसरी तरफ मौसम के अनुसार कृषि भूमि का वर्गीकरण खरीफ, रबी और जायद के आधार पर किया जाता है

कृषि के बारे में विस्तार से जानने के लिए हमें कृषि की तीनों शाखाओं के बारे में जानना होगा। इस प्रकार कृषि को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

- 1) फसल उत्पादन
- 2) पशु प्रबंधक
- 3) संबद्ध कृषि

1) फसल उत्पादन : फसल उत्पादन को तीन भागों में बाटा जा सकता है।

- 1) कृषि विज्ञान
- 2) बागवानी
- 3) वानिकी



1) कृषि विज्ञान : कृषि विज्ञान में पौष्टिक या सर्वोत्तम फसलों के उत्पादन हेतु पौधों का चयनात्मक प्रजनन तथा मृदा के क्षरण को रोकना व मृदा को अधिक उत्पादक तथा लाभदायक बनाने का अध्ययन शामिल है।

पौधों के प्रजनन ने फसल पैदावार में वृद्धि की है और साथ ही मक्का, सोयाबीन और गेहूँ सहित कई फसलों के पोषण मूल्य में सुधार किया है। जिसके परिणामस्वरूप नए पौधों का विकास हुआ है। उदाहरण के लिये राई और गेहूँ के संकरण से ट्रीटिकल नामक एक संकर अनाज का उत्पादन किया गया। ट्रीटिकल में राय और गेहूँ की तुलना में अधिक उपयोगी प्रोटीन होता है।

कृषि उत्पादन सीधे भूमि की गुणवत्ता पर निर्भर करता है और भूमि की गुणवत्ता मिट्टी के प्रकार, जल उपलब्धता और जलवायु पर निर्भर करती है। भारत में गुणवत्तापूर्ण कृषि भूमि की उपलब्धता क्षेत्र के अनुसार अलग अलग होती है जिसमें

संख्या वाला देश है। जो भारतीय कृषि का एक मुख्य स्तम्भ है तथा ग्रामीण आजीविका, पोषण और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

भारत दूध उत्पादन में पहले स्थान पर है जो विश्व उत्पादन का 24.76 प्रतिशत योगदान करता है। भारत अंडे उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है और मांस उत्पादन में पाँचवे स्थान पर है। देश की लगभग 8.8 प्रतिशत जनसंख्या इस क्षेत्र से रोजगार प्राप्त करती है।

पशुधन क्षेत्र ने वर्ष 2014-15 से 2022-23 तक 12.99 प्रतिशत के सीएजीआर से वृद्धि की है और वर्ष 2022-23 में भारत ने सकल मूल्यवर्धन का 5.50 प्रतिशत योगदान दिया। पशुधन जैविक खाद प्रदान कर मृदा की उर्वरता में सुधार करता है और रासायनिक उपयोग को घटाकर संधारणीय कृषि को बढ़ावा देता है। 50 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण महिलाएँ पशुधन गतिविधियों में संलग्न हैं जो उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाता है और लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है। पशुधन का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व भी है जो सामुदायिक बंधनों को मजबूत करता है और पारंपरिक प्रथाओं को संरक्षित करता है।

यह क्षेत्र खराब नस्ल, अपर्याप्त आहार, उचित पशु चिकित्सा सेवा, कोल्ड चैन सुविधाओं और आधुनिक बूचड़खानों की कमी से ग्रस्त है। अनियमित मौसम, बढ़ते तापमान और चारे की कमी के कारण पशुधन उत्पादकता को प्रभावित करता है। लगभग 60 प्रतिशत संक्रामक रोग पशुजन्य हैं। जो अपर्याप्त पशु चिकित्सा से ग्रस्त हैं। भारत सरकार राष्ट्रीय पशुधन मिशन, राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम पशुधन को और बेहतर बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

2) मत्स्य पालन : यह क्षेत्र भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 1.1 प्रतिशत और कृषि सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 7 प्रतिशत का योगदान देता है। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है। जिसकी वैश्विक उत्पादन में लगभग 8 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। देश में आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक प्रमुख मछली उत्पादक देश हैं जो मत्स्य पालन में लगभग 75 प्रतिशत का योगदान देते हैं। किसानों की अतिरिक्त आय में योगदान देता है।

मत्स्य पालन में बिना उचित लाइसेंस के मछली पकड़ना, प्रतिबंधित उपकरणों का इस्तेमाल करना, समुद्र में मछली पकड़ने की सीमा की अनदेखी करना, पुराने हो चुके मछली पकड़ने के जहाज, उपकरण और प्रसंस्करण सुविधाएँ इस क्षेत्र की दक्षता और उत्पादकता में बाधा डालते हैं। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के कारण मछलियों के वितरण में बदलाव, उत्पादकता में कमी और बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि हुई है। अपशिष्ट पदार्थों और कचरों का समुद्रों में जमाव तथा इनका निपटान न करना भी एक चिंता का विषय है।

इस क्षेत्र को प्रोत्साहन हेतु भारत सरकार प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना और नीली क्रांति जैसी योजनाओं के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने, स्थिरता में सुधार लाने और किसानों की आय बढ़ाने का प्रयास के रही है। एफ आई डी एफ के माध्यम से बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण, राष्ट्रीय मत्स्य पालन नीति के माध्यम से नियमों और प्रतिबंधों के माध्यम से जिम्मेदारी से मछली पकड़ने को बढ़ावा देना, किसान क्रेडिट के माध्यम से वित्तीय सहायता देना तथा मत्स्य सेतु जैसे एप में माध्यम से तकनीक का लाभ उठाना इत्यादि।

3) सम्बद्ध कृषि : इस क्षेत्र को दो भागों में बाटा जा सकता है।

1) कृषि इंजीनियरिंग 2) गृह विज्ञान

1) कृषि इंजीनियरिंग : मेसन वॉ को भारत में कृषि इंजीनियरिंग का जनक माना जाता है। जिसे कृषि और जैव प्रणाली इंजीनियरिंग भी कहते हैं। फसल की गुणवत्ता बढ़ाने और बर्बादी को कम करने वाले उपकरण और प्रणालियाँ प्रदान करके, कृषि इंजीनियरिंग उच्च पैदावार, बेहतर कटाई-पश्चात प्रबंधन और किसानों की आय वृद्धि में सहायक होती है। जिससे कृषि क्षेत्र और व्यापक अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

जी डी पी में कृषि क्षेत्र का योगदान लगभग 18 प्रतिशत है जिसको बनाये रखने तथा सुधारने में कृषि इंजीनियरिंग की महत्वपूर्ण भूमिका है। कृषि को अधिक कुशल और उत्पादक बनाकर, कृषि इंजीनियरिंग इस क्षेत्र पर निर्भर आबादी के बड़े हिस्से की आय बढ़ाने में सहायक होती है, जिससे आर्थिक गतिविधि को बढ़ावा मिलता है।

भारत सरकार भी कृषि इंजीनियरिंग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से सक्रिय रूप से काम कर रही है। उदाहरण के लिए :

क) कृषि मशीनीकरण पर उप मिशन : जिसका उद्देश्य किसानों को किराये पर कृषि उपकरण और मशीनरी आसानी से उपलब्ध करने के लिए ग्राम स्तरीय कस्टम हाइरिंग सेंटर (सी एच सी) और हाई - टेक हब (एच टी एच) स्थापित करना। जिससे छोटे और सीमांत किसानों तक कृषि मशीनीकरण की पहुँच सुगम हो सके। किसानों को व्यक्तिगत कृषि मशीनरी/उपकरणों की खरीद पर 40 से 50 प्रतिशत तक और ग्रामीण उधमियों द्वारा स्थापित कस्टम हाइरिंग सेंटर के लिए 80 प्रतिशत तक की वित्तीय सहायता उपलब्ध है।

ख) डिजिटल कृषि मिशन : यह प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग को एकीकृत करता है। पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने तथा किसान कल्याण हेतु साक्ष्य - आधारित एक व्यापक किसान - केंद्रित डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करता है। जिसमें इंटरनेट ऑफ थिंग्स, ड्रोन तकनीक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे स्मार्ट कृषि समाधानों के कार्यान्वयन पर जोर दिया गया है।

ग) राष्ट्रीय कृषि विकास योजना : सरकार द्वारा प्रौद्योगिकी और नवाचार सहित समग्र कृषि विकास के लिए राज्यों को सहायता प्रदान करती है।

2) गृह विज्ञान : गृह विज्ञान में भोजन एवं पोषण, स्वास्थ्य, पर्यावरण, मानव विकास और विज्ञान शामिल है। स्कूलों में एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। इसमें खाद्य विज्ञान के मूल सिद्धांत, संतुलित आहार, कुपोषण, खाद्य संरक्षण और सामुदायिक पोषण को भी शामिल किया जाता है। राष्ट्रीय पोषण मिशन जो महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा संचालित है जिसका उद्देश्य देश में कुपोषण की चुनौती का समाधान करता है।

यह राष्ट्रीय पोषण मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह संतुलित आहार, विभिन्न खाद्य समूहों और पोषक तत्वों के महत्व के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करता है। जो गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली

महिलाओं, किशोरियों और बच्चों सहित लक्षित समूहों को सही खान-पान की आदतों के बारे में जानकारी करने में मदद करती है। जो माता और शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के मिशन में भी योगदान देता है।

गृह विज्ञान के सामने विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें तकनीकी और व्यावहारिक ज्ञान की कमी, संसाधनों का अभाव और बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य शामिल है। तथा इसमें ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से व्यावहारिक क्षमताओं और कौशल का मूल्यांकन करने में कठिनाई और परिवारों में प्रभावी हस्तक्षेप के आवश्यकता जैसी समस्याएँ भी शामिल है।

कृषि अर्थव्यवस्था को देश का इंजन कहा जा जाता है क्योंकि यह सकल घरेलू उत्पाद और ग्रामीण रोजगार दोनों में महत्वपूर्ण योगदान देती है। यह भारत की लगभग आधी आबादी को रोजगार प्रदान करती है। भारत की कृषि मुख्यतः प्रकृति पर निर्भर है। हरित क्रांति के बाद के दौर में, नई कृषि रणनीतियाँ, अनुसंधान और तकनीकी का उपयोग मुख्यतः महत्वपूर्ण खाद्यजो जैसे गेहूँ और चावल के उत्पाद तक ही सीमित था। किन्तु बदलती जलवायु और ग्लोबल वार्मिंग खेती को अप्रत्याशित बना रहे हैं। उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग करने की आवश्यकता ने भारत में कृषि 4.0 उदय हुआ। जो बुनियादी विकास, सरकारी पहल, सटीक खेती और स्वचालन के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, ड्रोन और रोबोटिक्स जैसी उन्नतियों से प्रेरित है।

नए जमाने के किसान खेतों में इस्तेमाल होने वाले उर्वरकों के उच्चतम स्तर को निर्धारित करने के लिए मृदा मानचित्रण सॉफ्टवेयर का भी उपयोग कर रहे है। कृषि में उभरती हुई ये तकनीकें अधिक अवसरों का मार्ग प्रशस्त करती है। एग्रोटेक स्टार्ट-अप और पारंपरिक किसान भी खाद्य मूल्य शृंखला में उत्पादन में सुधार के लिए नवीनतम समाधानों और रुझानों का उपयोग कर रहे है इसमें किसान दक्षता बढ़ाने और अधिक फसलों का उत्पादन करने के लिए क्लाउड-आधारित समाधान और अन्य प्रासंगिक उन्नत कृषि प्रबंधन तकनीकों जैसे नई तकनीकों को अपनाना शामिल है।

भारतीय किसानों ने अब फसल की पैदावार, मौसम की स्थिति और मंडियों में कीमतों के रुझान का पूर्वानुमान लगाने के लिए ए आइ/एम एल - संचालित तकनीकों का उपयोग करना शुरू कर दिया है। कृषि में ड्रोन का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। जिसके माध्यम से किसानों को अपने बड़े खेतों का सर्वेक्षण करने और डेटा संग्रह के माध्यम से अपने खेतों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलती है। ड्रोन के माध्यम से फसलों और पशुधन की अधिक लगातार और किफायती दुरस्त निगरानी संभव हुई है। इसके अलावा पोषक तत्वों और कीटनाशकों का बेहतर उपयोग को बढ़ावा मिल है।

एरियल इमेजिंग में सिंचाई परियोजनाओं की क्षमता और भूमि क्षरण, कटाव और जल निकासी पर उनके प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए भौगोलिक सूचना प्रणाली तकनीक का उपयोग शामिल है। हाइड्रोपोनिक्स खेती की अवधारणा कम पानी की खपत के साथ बेहतर उपज, बनावट और अंतिम उत्पाद पर आधारित है। इन पौधों में व्यापक जड़ प्रणालियों की आवश्यकता नहीं होती।

ऊर्ध्वाधर खेती शहरी वातावरण में फसले उगाने की क्षमता प्रदान करती है। यह पारंपरिक खेती की तुलना में फसल उगाने के लिए आवश्यक भूमि की मात्रा को काफी हद तक कम कर देती है।

भारत में भावी खेती : कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विस्तार हेतु एक पुस्तिका ' जो विश्व आर्थिक मंच और भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय द्वारा तैयार की गई एक रिपोर्ट है। जो भारतीय कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग हेतु एक रोडमैप प्रस्तुत करती है। ताकि पैदावार बढ़ाई जा सके, जोखिम प्रबंधन में सुधार किया जा सके और बाजार पहुँच बढ़ाई जा सके।

भारत सरकार भी कृषि को विभिन्न योजनाओं, सब्सिडी और वित्तीय सहायता के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाने और कृषि क्षेत्र का सतत विकास करने का प्रयास कर रही है। जिसके लिए सरकार द्वारा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की स्थापना की गई। कृषि लागत एवं मूल्य आयोग, जो फसलों के लिए मूल्य निर्धारित नीतियों पर सरकार को सलाह देता है। विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय के कृषि विपणन सूचना प्रणाली तंत्र पोर्टल पर किसानों के लिए विभिन्न महत्वपूर्ण सूचनाएं दैनिक

स्तर पर उपलब्ध कराई जाती है। उदाहरण के लिए : कृषि उत्पाद, कीमतों एवं बाजारों के आधार पर दैनिक विवरण की उपलब्धता, जिलों के आधार पर कृषि उत्पाद का विवरण उपलब्ध कराया जाता है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से सीधे ही आर्थिक लाभ किसान के खाते में पहुंचता है। जो धोखाधड़ी और बीचोलियों से होने वाले नुकसान से किसानों को बचाती है।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जो हर बूंद अधिक फसल के लक्ष्य के साथ किसानों को बेहतर सुविधा देती है। प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन, जो कृषि के समग्र विकास के साथ दलहन के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है।

भारत सरकार इस क्षेत्र में सुधारों और किसानों की आय दोगुनी करने के लिये 7 सूत्रीय रणनीति पर काम कर रही है।

- 1- प्रति बूंद-अधिक फसल रणनीति (Per Drop More Crop)- इस रणनीति के तहत सूक्ष्म सिंचाई पर बल दिया जा रहा है। इससे कृषि क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले पानी की मात्रा में कमी आएगी, इससे जल संरक्षण के साथ ही सिंचाई की लागत में भी कमी आएगी। ये रणनीति पानी की कमी वाले क्षेत्रों में विशेष रूप से लाभदायक है।
- 2- कृषि क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का प्रयोग करने पर बल दिया जा रहा है साथ ही खेतों में उर्वरकों की उतनी ही मात्रा का प्रयोग करने करने के लिये जागरूकता का प्रसार किया जा रहा है जितनी मात्रा मृदा स्वास्थ्य कार्ड के अनुसार प्रयोग करना उचित है। इससे मृदा की गुणवत्ता में सुधार होगा साथ ही उर्वरकों पर होने वाले खर्च में भी प्रभावी कमी आएगी। इससे मृदा और जल प्रदूषण में भी कमी आएगी।
- 3- कृषि उपज को नष्ट होने से बचाने के लिये गोदामों और कोल्ड स्टोरेज पर निवेश को बढ़ाया जा रहा है। इससे उपज की बर्बादी रुकेगी, खाद्य सुरक्षा की स्थिति और मजबूत होगी तथा शेष उपज का अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात भी किया जा सकता है।
- 4- खाद्य प्रसंस्करण के माध्यम से कृषि क्षेत्र में मूल्यवर्धन को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में अपार संभावनाएँ निहित है।
- 5- उपज का सही मूल्य दिलाने के लिये राष्ट्रीय कृषि बाजार के निर्माण पर बल दिया गया है। इससे देशभर में कीमतों में समानता आएगी और किसानों को पर्याप्त लाभ मिल सकेगा।

6- भारत में हर साल अलग-अलग क्षेत्रों में सूखे, अग्नि, चक्रवात, अतिवृष्टि, ओले जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसलों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इन जोखिमों को कम करने के लिये वहनीय कीमतों पर फसल बीमा उपलब्ध कराया गया है। हालाँकि इसका वास्तविक लाभ अब तक पर्याप्त किसानों को नहीं मिल पाया है, इसका लाभ अधिकांश लोगों तक पहुँचे इसके लिये उपाय किये जाने चाहिये।

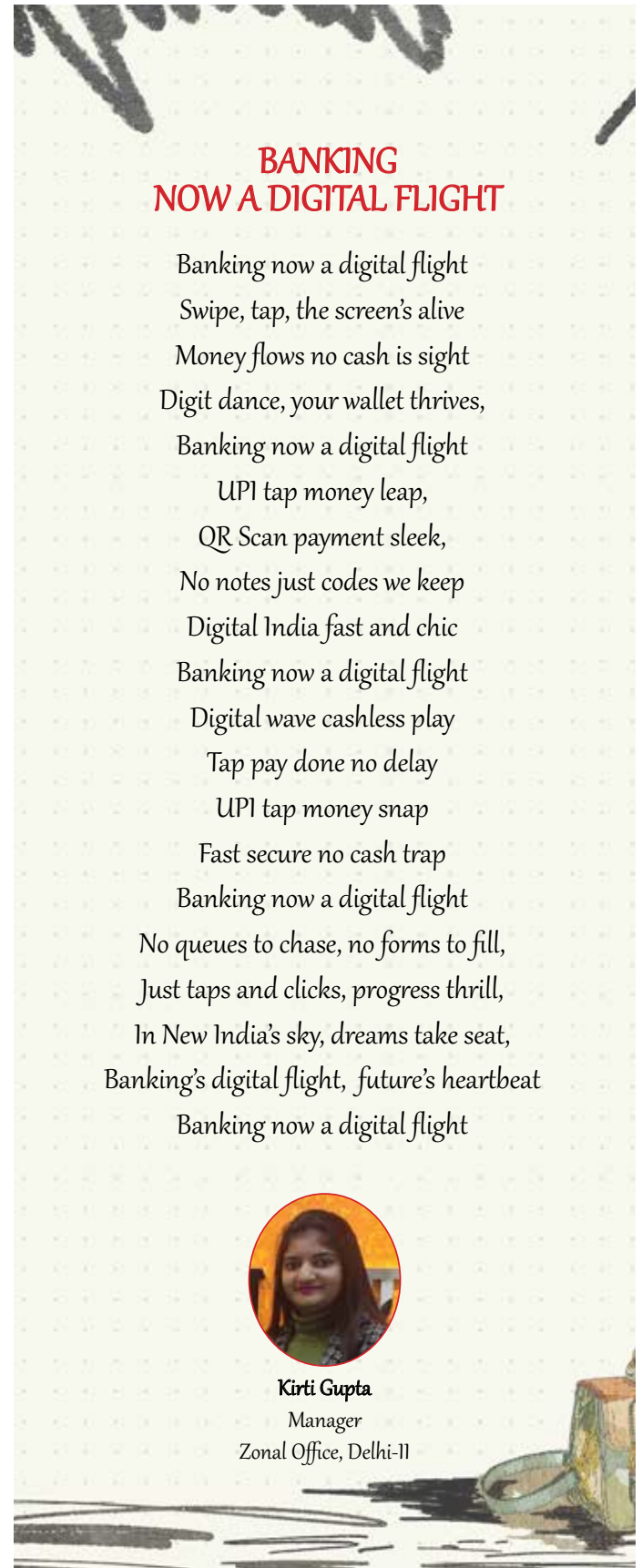
7- विभिन्न योजनाओं के माध्यम से डेयरी, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, पोल्ट्री, मत्स्य पालन इत्यादि कृषि सहायक क्षेत्रों के विकास पर बल दिया जा रहा है। चूँकि देश के अधिकांश कृषक इन चीजों से पहले से ही जुड़े हुए हैं अतः इसका सीधा लाभ उन्हें मिल सकता है। आवश्यकता है जागरूकता, पशुओं की नस्ल सुधार जैसे कारकों पर प्रभावी तरीके से काम किया जाए।

चूँकि देश की अधिकांश आबादी कृषि पर ही निर्भर है अतः देश में गरीबी उन्मूलन, रोजगार में वृद्धि, भुखमरी उन्मूलन इत्यादि तभी संभव है जब कृषि और किसानों की हालत में सुधार किया जाए। उपरोक्त उपायों को यदि प्रभावी तरीके से लागू किया जाए तो निश्चित तौर पर कृषि की दशा में सुधार आ सकता है। इससे इस क्षेत्र में व्याप्त निराशा में कमी आएगी, किसानों की आत्महत्या रुकेगी, और खेती छोड़ चुके लोग फिर से इस क्षेत्र में रुचि लेने लगेंगे।

अंतिम रूप से यही कहा जा सकता है कि कृषि इस देश की रीढ़ की हड्डी के समान है जिसका स्वस्थ रूप से हमेशा मजबूत रहना आवश्यक है। जो देश की एक बड़ी आबादी को रोजगार प्रदान करता है। जो एक बाजार संचालित उद्योग है। जिसने पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसीलिए हमारे संविधान निर्माताओं ने कृषि को भारतीय संविधान की अनुसूची 7 में यह मुख्यतः राज्य का विषय बनाया है। तथा जो संविधान के अनुच्छेद 48 (राज्यों के नीति निर्देशक सिद्धान्त) राज्य को कृषि और पशुपालन को आधुनिक एवं वैज्ञानिक तरीके से व्यवस्थित करने का निर्देश देता है।

कृषि क्षेत्र के स्टार्ट - अप किसानों को बेहतर उत्पादन, मापन उपकरणों और अन्य डेटा - आधारित रणनीतियों के माध्यम से सहायता प्रदान करने हेतु नवीन समाधान करने की दिशा में काम कर रहे हैं। जो इस देश के विकास को एक महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करने कर रहा है।

ग्राहक सेवा सहयोगी
शाखा कंझावला, दिल्ली



बैंक के विभिन्न आंचलिक कार्यालयों में 23 दिसंबर, 2025 को



कि





अखिल भारतीय स्तर पर किसान दिवस का आयोजन किया गया।



Master the art of living light



Bhawna

Life teaches us through experiences — both good and bad. Over time, we start to understand that wisdom is not about how much we know, but how deeply we live. Here are ten simple but powerful principles that can transform the way you think, feel, and act. Each of them holds a message that can guide us toward peace, purpose, and growth.

1. STAY LOW, GLOW HIGH.

Humility is one of the most underrated virtues in today's world. "Stay low, glow high" means keeping your feet grounded even when your achievements soar high. It reminds us that we don't need to shout about our success — our results will speak for us.

When we stay humble, we invite peace into our lives. Ego often creates distance between people, but humility builds bridges. For example, take the story of A.P.J. Abdul Kalam — despite being India's President and one of the world's most respected scientists, he remained simple, approachable, and humble. His glow came from his character, not his titles.

You don't need to announce your worth. Let your calm confidence and silent hard work shine for you.

2. FORGIVENESS IS THE KEY TO OPEN YOUR HEART CHAKRA.

Holding on to anger, resentment, or hurt closes our heart. The "heart chakra" represents love, compassion, and emotional balance. When we forgive, we release heavy emotions that keep us trapped in pain.

Forgiveness doesn't mean the other person was right — it means you choose peace over poison. Imagine carrying a bag of stones everywhere you go — that's what grudges do. The moment you drop the bag, you feel lighter.



Think of Nelson Mandela. After spending 27 years in prison, he forgave those who imprisoned him and worked to build a united South Africa. He once said, "Resentment is like drinking poison and then hoping it will kill your enemies."

Forgiveness frees your soul. It reopens your heart to love, empathy, and joy.

3. IGNORANCE IS A BLISS.

Sometimes, not knowing too much is actually peaceful. "Ignorance is bliss" doesn't mean staying foolish — it means choosing not to involve yourself in negativity or unnecessary drama.

In today's digital world, overexposure to news, gossip, and comparison drains our mental energy. For example, constantly checking social media can make us feel jealous, anxious, or insecure. But when we limit what we see, we protect our inner peace.

There's wisdom in staying detached from things that don't help your growth. Focus on what truly matters — your peace, purpose, and progress.

4. DELEGATE, NOT MICROMANAGE.

Leadership is not about controlling everything; it's about trusting others to do their part. "Delegate, not micromanage" means empowering people instead of suffocating them with over-involvement.

When you delegate, you give others the chance to grow, take responsibility, and learn from mistakes. Micromanagement, on the other hand, kills creativity and builds resentment.

Even in personal life, this applies — you can't control every person or situation. Delegation teaches trust and balance, and it gives you more time to focus on what truly requires your attention.

5. PRESSURE IS PRIVILEGE.

We often see pressure as a burden, but in reality, it's a sign that we're trusted with responsibility. "Pressure is privilege" means that when life puts you under stress, it's because you have the ability to handle something important.

Athletes, for example, play their best under pressure. A cricketer facing the last ball of the match, a student giving a final exam, or a surgeon performing a critical operation — these moments of pressure bring out greatness.

Diamonds are created under pressure — not comfort.

6. LIMIT YOUR AVAILABILITY TO CREATE EXCLUSIVITY.

Being too available can make others take you for granted. "Limit your availability" means setting healthy boundaries — emotionally, mentally, and socially.

When you make yourself available all the time, people

may stop valuing your time and energy. But when you become selective about where you invest your presence, you create exclusivity and respect.

Think about luxury brands — part of their value comes from being rare. Similarly, when you protect your time, people begin to respect it more.

Say "no" sometimes — preserve your peace and energy for what truly matters.

7. REPAIR OVER REPLACEMENT.

In today's throwaway culture, people replace things — and relationships — too easily. "Repair over replacement" is a mindset that values effort, loyalty, and patience.

When something breaks — whether it's a gadget or a bond — our first thought shouldn't be to discard it, but to fix it. Repairing teaches resilience and care.

Take an example of an old couple celebrating 50 years of marriage. When asked their secret, they often say, "We come from a time when if something was broken, we fixed it, not replaced it."

Repairing relationships, habits, or even ourselves builds emotional maturity. It shows commitment, not convenience.

8. YOUR VIBE ATTRACTS YOUR TRIBE.

Energy doesn't lie. The kind of energy you carry decides the people you attract. "Your vibe attracts your tribe" means like-minded people are drawn to your frequency.

If you're kind, confident, and positive, you'll naturally attract people with similar values. But if you're negative, complaining, or insecure, you'll often find yourself surrounded by the same energy.

Change your vibe — and your circle will change too. Surround yourself with gratitude, peace, and self-respect. The right tribe will follow.

9. SIMPLICITY OVER COMPLEXITY.

Simplicity is the ultimate sophistication. "Simplicity over complexity" teaches us that clarity is power.

In every area of life — work, relationships, habits — we often complicate things unnecessarily. The more we simplify, the more we can focus on what truly matters.

Steve Jobs once said, "Simple can be harder than complex.



You have to work hard to get your thinking clean to make it simple." The iPhone became iconic not because it was overcomplicated, but because it was beautifully simple to use.

In our personal lives too, simplicity brings peace. Saying no to unnecessary drama, material excess, or overthinking helps us live with joy and balance.

10. EVERYTHING IS PREDEFINED.

This philosophy teaches surrender. "Everything is predefined" means certain things in life — like birth, death, success, or failure — are already written. We can't control destiny, but we can control our effort and attitude.

Many times, we question why things happen a certain way. But when we look back, everything seems to have a purpose. That job you didn't get may have pushed you toward a better career. That heartbreak may have taught you self-love.

Believing that life is predefined doesn't mean being lazy. It means trusting the timing of your life. Do your best and let the universe handle the rest.

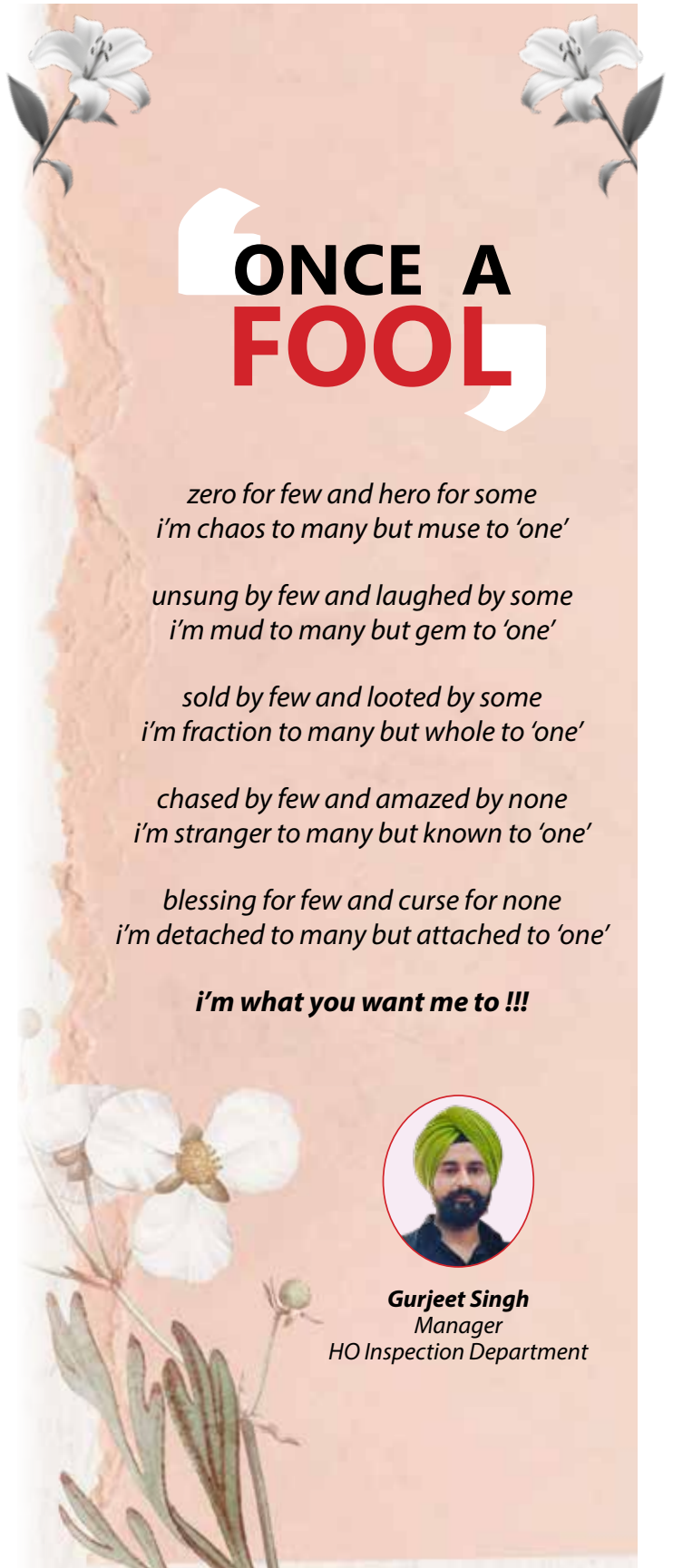
FINAL REFLECTION: THE ART OF LIVING LIGHT.

Each of these ten lessons carries a quiet strength. Together, they teach us the art of living light — not by avoiding challenges, but by facing them with calm and clarity.

- ◆ Stay grounded, even when you rise.
- ◆ Forgive, so your heart stays open.
- ◆ Protect your peace by staying away from unnecessary noise.
- ◆ Trust others — you don't have to control everything.
- ◆ Treat pressure as a blessing, not a curse.
- ◆ Respect your time — it's your most valuable currency.
- ◆ Choose repair — in things, in people, in yourself.
- ◆ Keep your energy clean, and you'll attract your kind.
- ◆ Simplify everything you can.
- ◆ And finally, surrender — what's meant for you will always find you.

In a world full of speed, noise, and complexity, these truths act as soft reminders to slow down and live deeply. They help us create a life that glows quietly — full of purpose, balance, and peace.

Manager
Zonal Office, Faridkot



क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, मुंबई का उद्घाटन

श्री स्वरूप कुमार साह (प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी) एवं श्री विनोद कुमार पांडेय (क्षेत्र महाप्रबंधक, मुंबई) के करमलों से क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, मुंबई के नवीन परिसर का उद्घाटन किया गया।



Veer Bal Diwas :

When Courage Wore the Face of Children

Manpreet Kaur

It marks the martyrdom (shahidi) of the Chaar Sahibzaade, the sons of Guru Gobind Singh Ji. The two younger sons— Sahibzada Zorawar Singh Ji (9) and Sahibzada Fateh Singh Ji (7)—were bricked alive by the Mughal authorities in Sirhind in 1705. Their elder brothers, Sahibzada Ajit Singh Ji (18) and Sahibzada Jujhar Singh Ji (14), laid down their lives on the battlefield of Chamkaur Sahib.

They were not victims of history. They were its conscience. Veer Bal Diwas is not only about Sikh history—it is about human values, moral courage, and the power of faith over fear. Their story transcends religion, time, and geography. It asks every generation one simple question:

“WHAT WOULD YOU STAND FOR, EVEN IF IT COST YOU EVERYTHING?”

To understand the magnitude of their sacrifice, one must first understand the time they were born into. The late 17th century was an era of intense religious persecution. The Mughal Empire under Emperor Aurangzeb enforced harsh policies against non-Islamic faiths. Forced conversions, destruction of places of worship, and violent suppression were common.

Guru Gobind Singh Ji, the tenth Sikh Guru, stood firmly against injustice. In 1699, he created the Khalsa Panth—a collective of saint-soldiers committed to truth, equality, and fearlessness. His children were raised in this very spirit. They did not grow up in palaces. They grew up in training grounds of courage.

CHAMKAUR SAHIB: WHERE YOUTH BECAME IMMORTAL

In December 1705, after weeks of betrayal, starvation, and relentless pursuit by Mughal forces, Guru Gobind Singh Ji and his small band of followers were surrounded at Chamkaur Sahib. Outnumbered by thousands, the Sikhs knew there



would be no escape.

Inside the fort, among the defenders, stood two young boys:

- ◆ Sahibzada Ajit Singh Ji – 18 years old
- ◆ Sahibzada Jujhar Singh Ji – 14 years old

They did not hide behind their father. They asked permission to go into battle.

One by one, they charged into the enemy forces, fighting with unmatched bravery. Though young in age, their courage shook the Mughal army. They were eventually martyred, but their spirit lived on. Their sacrifice at Chamkaur Sahib is remembered not as a defeat, but as a victory of fearlessness over tyranny.

SIRHIND : WHERE INNOCENCE FACED BRUTALITY

While the elder Sahibzaade fell in battle, the younger two were separated from their family during the chaos.

Sahibzada Zorawar Singh Ji (9) and Sahibzada Fateh Singh Ji

(7), along with their grandmother Mata Gujri Ji, sought refuge with a former servant—who betrayed them to the Mughal authorities. They were taken to Sirhind, to the court of Wazir Khan. There, the children were imprisoned in the Thanda Burj—an open, icy tower—during the peak of winter. They were given no food, no blankets, and no mercy.

For days, they were pressured to renounce their faith and convert to Islam. They refused. Not once. Not for a moment. They chose death over betrayal of their conscience.

Behind the unbreakable strength of the younger Sahibzaade stood a quiet but powerful force — their grandmother, Mata Gujri Ji. It was Mata Ji's spiritual presence that became their emotional shield in the darkest hours.

Imprisoned with them in the Thanda Burj, Mata Gujri Ji endured the same bitter cold, hunger, and isolation. Yet she did not allow despair to enter their hearts. She reminded them of who they were — the sons of Guru Gobind Singh Ji, the torchbearers of truth, the future of the Khalsa spirit. Through stories of courage, prayer, and unwavering faith, she kept their resolve alive.

For a child, fear is natural. But Mata Ji, very gracefully, transformed fear into strength. She taught them that the body can be imprisoned, but the soul remains free. Her words became their armor. Her faith became their warmth.

When the Sahibzaade were taken away for the final time, Mata Gujri Ji sensed that she would not see them again. Yet there was no regret in her heart—only pride. Unable to break their spirit, Wazir Khan ordered the unimaginable. The two children were to be bricked alive within a wall. As the bricks rose around



A Legacy That Lives On The Chaar Sahibzaade did not live long lives. But they lived complete ones. They did not grow old. But they became immortal. They did not compromise. And so, they never truly died. Veer Bal Diwas is not about looking back in sorrow—it is about moving forward with strength, truth, and fearlessness.

them, the Sahibzaade remained calm. They recited prayers. They held onto each other. They held onto their faith. When the wall collapsed under its own weight, they were finally executed. Upon hearing of their martyrdom, Mata Gujri Ji's soul departed this world, reunited with her grandsons in spirit.

Mata Gujri Ji's sacrifice is a reminder that courage is often born in silence. She did not fight on a battlefield, but she shaped warriors of the highest order. Through her, we see the power of faith passed through generations, and the quiet strength of a woman who stood unbroken in the face of unimaginable loss.

Her legacy lives not only in history — but in every child taught to choose truth over fear.

VEER BAL DIWAS IN MODERN INDIA

In 2022, the Government of India officially declared 26 December as Veer Bal Diwas, recognising the supreme sacrifice of the Chaar Sahibzaade. This national observance was not only an act of remembrance—it was a moral statement. It acknowledged that the courage shown by four children over three centuries ago is a living source of inspiration for India's present and future.

The recognition filled a long-standing gap in public awareness. While India remembers many heroes, the story of the Sahibzaade had largely remained within Sikh history and community memory. By instituting Veer Bal Diwas at the national level, their sacrifice was brought into the collective conscience of the nation—where it truly belongs. Across the country, the day is now observed in schools, universities,



gurdwaras, cultural centres, and youth organisations. Educational institutions organise storytelling sessions, exhibitions, debates, and street plays. Children participate in essay competitions, art projects, and dramatizations that help them emotionally connect with the story, not just memorise it.

Gurdwaras hold special prayer gatherings, kirtans, and lectures, while community organisations conduct marches, awareness drives, and value-based workshops. Digital platforms and short films further amplify the message, making the legacy of the Sahibzaade accessible to a global audience. In a world shaped by material success, instant gratification, and moral shortcuts, this story is urgently needed. We are witnessing a growing value crisis—where convenience often overrides conscience. The Sahibzaade remind us that character matters more than comfort, and principles are worth defending, even when the cost is high.

Veer Bal Diwas is therefore not only about honouring the past—it is about rebuilding the moral compass of society. It calls us to raise children who are not only capable, but courageous; not only ambitious, but ethical. Their story does not belong to history alone. It belongs to the world we are shaping today. The Sahibzaade stood for humanity—not just a religion. They stood for:

- ◆ Freedom of belief
- ◆ Equality of all humans

- ◆ Resistance to injustice
- ◆ Dignity over submission

These values are universal. Their courage is not limited to Sikh history — it is a lesson for every nation, every child, every conscience. When we look across history—at moments of suffering, persecution, and moral courage—few events carry the spiritual weight of Sirhind. Writers and thinkers have often compared it to other great tragedies: the crucifixion of Jesus, the persecution of faith communities, the silencing of conscience by power. Yet Sirhind stands apart, not because of the scale of violence, but because of the purity of choice. These were not warriors forced into battle. They were children offered life in exchange for surrender. And they refused.

Their martyrdom reminds humanity that true greatness is not measured by victory, but by moral clarity. Sirhind is not a chapter of pain — it is a chapter of awakening. It confronts every generation with a mirror and asks: When comfort and truth stand on opposite sides, which will you choose?

Across India and the world, Veer Bal Diwas is observed with:

- ◆ Educational programs
- ◆ Cultural performances
- ◆ Storytelling sessions
- ◆ Exhibitions
- ◆ Prayer gatherings

But remembrance must go beyond ceremonies. The true tribute lies in living their values—in raising children who are compassionate yet courageous, strong yet ethical, rooted yet progressive.

A Legacy That Lives On The Chaar Sahibzaade did not live long lives. But they lived complete ones. They did not grow old. But they became immortal. They did not compromise. And so, they never truly died. Veer Bal Diwas is not about looking back in sorrow—it is about moving forward with strength, truth, and fearlessness.

Because when courage wears the face of children, the world is reminded that even the smallest hearts can carry the greatest bravery. May their spirit continue to guide us. May their courage awaken ours.

D/o Dr. Charanjit Singh
Ex. Chief Manager

Kisan Credit Card: lifeline of farm credit



Nirmaljit Singh Chatrath

Kisan Credit Card (KCC) is a landmark financial innovation that emerged from farmers' long-standing yearning for reliable, affordable and transparent sources of credit. Earlier, the cultivators for decades were largely dependent on moneylenders or commission agents (aka-arhtias), who charged exorbitant interest rates from them without any transparency in accounts. Though some relief came through Primary Land Mortgage Banks by equipment financing and Cooperative institutions for the supply of inputs such as seeds and fertilisers, but these efforts remained modest when measured against the rapidly rising financial needs of agriculture—especially with increasing mechanisation and high input costs. Thus, arose the need to explore potential credit avenues to meet the demand.

Until the end of ninety's, despite a significant network of commercial banks, institutional lending to agriculture remained inadequate due to perceived risks and procedural complexities compared to other sectors. To address this imbalance, the Government mandated all banks to allocate a specified portion (18%) of their gross credit for agriculture under Priority Sector Lending norms. This move definitely encouraged banks to step up farm lending, but farmers still had to undergo the cumbersome process of loan sanction and fresh documentation on every cropping season, along with stringent end-use checks. To overcome these constraints, the banks then introduced Revolving Crop Loan (RCL) scheme, which largely eased access to credit. Later, upon extensive

deliberations and refinements, RCL eventually evolved into the Kisan Credit Card (KCC) scheme. Designed as a composite and flexible credit instrument, the scheme today caters to farmers' diverse financial needs viz production, investment and consumption through a single window. Freeing farmers from the clutches of informal moneylenders, KCC has played a transformative role in improving the socio-economic condition of our peasantry. The scheme now stands as a strong pillar of agricultural lending and has become a symbol of farmers' growing self-reliance on institutional finance.



ORIGINATION HISTORY:

Essentially a Punjab And Bank product, the concept of Kisan Credit Card was first conceived at a meeting of Farmers Club constituted by our bank branch at the historic town of Sultanpur Lodhi (where myself was then branch manager). In short time, the innovative idea got wide publicity across media and farming fraternity because of the ease-of- getting farm credit. After discussions on its vivacity by our Head Office top functionaries level, it was eventually taken to the Union Finance Minister, then Dr Manmohan Singh Ji. Getting impressed with the concept, the honourable FM referred it to Reserve Bank of India for further action. Thereupon, it was discussed with the then Governor RBI, Dr C. Rangarajan in 1995 by our bank representatives. After exhaustive deliberations and some modifications at various platforms, finally the KCC scheme was approved by RBI in 1998, following which it was adopted and implemented across the banking system.



ISSUANCE OF FIRST CARD:

Notably, the first credit card under the scheme was issued to a progressive farmer, namely Jagjit Singh, in the form of a laminated postcard bearing essential details such as the loan sanctioned limit and validity period. Formally it was given the nomenclature Zimidara Credit Card (ZCC), which was later changed to Kisan Credit Card to avoid feudal connotations associated with the term 'Zimidara'. Gradually, the KCC evolved into a modern, technology-enabled product, gaining popularity like other commercial credit cards. Today, it is linked to the RuPay digital platform and can be used for online transactions within the sanctioned limits, making it one of the most effective instruments in agri-financing.

ELIGIBILITY CRITERIA AND FIXATION OF CREDIT LIMIT:

All farmers—including landowners, tenant farmers, sharecroppers, and Joint Liability Groups (JLGs) engaged in cultivation—are covered to avail the KCC facility. Farmers involved in allied activities such as dairy, fisheries, piggy, poultry, and beekeeping are also entitled to credit under the scheme. The KCC scheme offers composite lending, for both short-term production credit and long-term investment needs such as farm mechanisation. A specific portion of the credit is permitted for domestic needs. The scheme does not prescribe any rigid upper or lower ceiling, enabling banks to tailor limits according to a farmer individual requirements. Operated mostly as a cash credit account, it allows farmers to draw funds as per their requirements, repay flexibly and reuse the limit. The credit limit under KCC is fixed based on the scale of finance recommended by the State Level Bankers' Committee (SLBC), taking into account the cropping pattern,

area cultivated (owned or leased), and the cycle of crop production. An additional component is included to meet farmer consumption needs. The entire credit extended under KCC qualifies as Priority Sector lending for banks.

INTEREST SUBVENTION & SUBSIDIES:

Currently, credit under the scheme is reasonably priced. Interest subvention on production credit up to 3 lakh is available in accordance with Government guidelines, in addition to other subsidies applicable under various agricultural schemes. The facility is initially sanctioned for a period of five years, which is reviewed or renewed thereafter based on the farmer's requirements and the satisfactory operation of the account.

ASSET CLASSIFICATION NORMS:

Standard prudential accounting stipulations under Asset Classification Norms apply to KCC advances. In line with RBI guidelines, for short-term production credit default over two crop cycles is considered, while for long-duration crops default over one crop cycle is taken into account for asset classification.

SCOPE FOR EXPANSION:

Being vital for sustained food grain production to ensure national food security, KCC scheme features prominently in successive Union Budgets. Alleviating the recurring financial constraints faced by farmers, performance of KCC scheme has so far been commendable with widespread adoption, driven by proactive marketing, competitive pricing, and enhanced loan limits. It has demonstrated immense potential in streamlining the flow of institutional credit to agriculture sector. In Punjab alone, there are 24.40 lakh crop loan cases as of Sept 2025, involving crop loan amount availed Rs 64,572 crores. As a key driver of farm credit, the scheme holds vast scope for further expansion to evolve into an umbrella covering not only production credit needs but also the broader welfare of annadata. Embedding life and health insurance, comprehensive crop insurance (fasal bima), timely and hassle-free credit delivery and instant compensation for losses due to natural calamities within the KCC framework would further enhance its effectiveness. Expanding the ambit of KCC can help restore farming its rightful stature of "uttam kheti"—a dignified, viable and sustainable livelihood once again.

Ex Deputy General Manager

बैंक की नवीन अनिवासी भारतीय शाखा माधापार, गुजरात का शुभारंभ



श्री राजीवा (कार्यपालक निदेशक) शाखा का उद्घाटन करते हुए



कार्यपालक निदेशक महोदय एवं क्षेत्र महाप्रबंधक, मुंबई शाखा के ग्राहकों तथा मीडिया से संवाद करते हुए।



इस अवसर पर श्रीमती महिमा अग्रवाल (महाप्रबंधक), श्री संजय प्रकाश श्रीवास्तव (महाप्रबंधक) एवं श्री राजेश मल्होत्रा (आंचलिक प्रबंधक, गांधीनगर) भी उपस्थित रहे।

श्री चमनलाल शींहमार(क्षेत्र महाप्रबंधक, चंडीगढ़) के नेतृत्व में पंजाब क्षेत्र के



आंचलिक कार्यालय अमृतसर



आंचलिक कार्यालय बठिंडा



आंचलिक कार्यालय चंडीगढ़



आंचलिक कार्यालय फरीदकोट



आंचलिक कार्यालयों में अनिवासी भारतीय ग्राहक सम्मेलन का आयोजन किया



आंचलिक कार्यालय होशियारपुर



आंचलिक कार्यालय जालंधर



आंचलिक कार्यालय मोगा



आंचलिक कार्यालय पंचकूला



17TH CENTRAL KYC RECORDS REGISTRY AWARENESS PROGRAM AT LUDHIANA

Our Bank successfully organized the 17th CKYCRR (Central KYC Records Registry) Awareness Program at Ludhiana. The event was graced by senior officials from RBI, CERSAI, FIU-INDIA and HDFC Bank. All dignitaries shared valuable insights on CKYCRR, KYC/AML compliance, and the future roadmap. Our Bank' Executives Shri Chaman Lal Shienhmar (Field General Manager, Chandigarh), Shri Anil Kumar (Deputy General Manager), Shri Malkit Singh (Zonal Manager, Ludhiana) and our staff members were also present there.



DIGITAL LIFE CERTIFICATE CAMPAIGN



Our Bank organised Digital Life Certificate Campaign at Amritsar. Department of Pension and Pensioner's Welfare Under Secretary Sh. Nagendra Kumar visited the campaign and appreciate the efforts of our bank. Shri Gurmeet Singh (Zonal Manager, Amritsar) and Shri Moti Lal (Assistant General Manager) were also present there to promot the campaign. Our Bank stands at 1st position in DLC 4.0 campaign in PAN India Basis.

साइबर आतंकवाद



पीयूष वालिया

आज के डिजिटल युग में पूरी दुनिया पहले से कहीं अधिक जुड़ी हुई है। सरकारों के कामकाज, बैंकिंग व्यवस्था, स्वास्थ्य सेवाएं, परिवहन सब कुछ अब तकनीक पर निर्भर है। इस जुड़ाव ने जहां हमारे जीवन को आसान बनाया है, वहीं इसने एक नए खतरे का भी द्वार खोला है- साइबर आतंकवाद। साइबर आतंकवाद का अर्थ है तकनीक और इंटरनेट का उपयोग करके ऐसा हमला करना जो भय, नुकसान या अव्यवस्था फैलाए और जिसके पीछे राजनीतिक, वैचारिक या धार्मिक उद्देश्य हों। पारंपरिक आतंकवाद जहां बंदूक या बम का उपयोग करता है, वहीं साइबर आतंकवाद कंप्यूटर, नेटवर्क और डाटा को हथियार बनाता है। सीधे शब्दों में कहा जाए तो यह ऑनलाइन युद्ध है। इसका खतरा भले ही अदृश्य हो, लेकिन इसका परिणाम किसी युद्ध से कम नहीं है।

साइबर आतंकवाद - अर्थ और परिभाषा

साइबर आतंकवाद दो शब्दों से बना है "साइबर" (जो कंप्यूटर या इंटरनेट से संबंधित है) और "आतंकवाद" (जो भय या हिंसा द्वारा राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का माध्यम है)। अतः साइबर आतंकवाद का अर्थ है कंप्यूटर तकनीक का उपयोग कर आतंकवादी गतिविधियां चलाना। सरल शब्दों में जब आतंकवादी इंटरनेट और तकनीकी माध्यमों से किसी देश या संस्था पर हमला करते हैं तो उसे साइबर आतंकवाद कहा जाता है। एफबीआई के अनुसार किसी भी कंप्यूटर प्रणाली, प्रोग्राम या डाटा पर राजनीतिक उद्देश्य से किया गया ऐसा योजनाबद्ध हमला जिससे गैर-लड़ाकू व्यक्तियों को हानि पहुंचे, उसे साइबर आतंकवाद कहा जा सकता है। निष्कर्ष रूप में जब इंटरनेट या कंप्यूटर का उपयोग किसी देश, संस्था या व्यक्ति के विरुद्ध वैचारिक या राजनीतिक कारणों से भय या नुकसान पहुंचाने के लिए किया जाए तो वही साइबर आतंकवाद कहलाता है।

साइबर आतंकवाद के प्रमुख पक्ष -

- ◆ **राजनीतिक या वैचारिक उद्देश्य** : साइबर आतंकवादी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि किसी विचारधारा या नीति के विरोध में हमला करते हैं।
- ◆ **महत्वपूर्ण ढांचे पर हमला** : सरकारी नेटवर्क, रक्षा प्रणाली, बिजली ग्रिड, बैंक या अस्पताल आदि महत्वपूर्ण संरचनाओं को आघात पहुंचाते हैं।
- ◆ **असीमितता** : साइबर आतंकवाद की कोई सीमा नहीं है। हमलावर कहीं भी बैठकर हमला कर सकता है, इसमें सीमाओं का कोई महत्व नहीं है।
- ◆ **गोपनीयता** : ऐसे अपराधों में अपराधियों की पहचान करना कठिन होता है क्योंकि वे एन्क्रिप्शन व नकली आईपी पते का प्रयोग कर ठगी को अंजाम देते हैं।
- ◆ **मानसिक प्रभाव** : साइबर आतंकवाद का उद्देश्य शारीरिक नुकसान पहुंचाना नहीं बल्कि भय, अविश्वास और अराजकता फैलाना होता है। यह जनता में डर का माहौल पैदा करते हैं जिससे भयपूर्ण परिवेश में घबराकर आमजन साइबर फ्रॉड का शिकार बनता है।

साइबर आतंकवाद का विकास: साइबर आतंकवाद की शुरुआत 1980 दशक के अंत और 1990 दशक की शुरुआत में हुई, जब कंप्यूटर, व्यापार और शासन का अहम हिस्सा बनने लगे। पहले साइबर हमले केवल आनंद या प्रसिद्धि के लिए होते थे परंतु जल्द ही राजनीतिक और धार्मिक समूहों ने तकनीक को हथियार के रूप में अपनाया शुरू किया। वर्ष 1991 के खाड़ी युद्ध में पहली बार सूचना युद्ध का महत्व सामने आया।

9/11 (2001) के बाद विश्वभर की सरकारों ने महसूस किया कि भविष्य के आतंकवादी हमले केवल बंदूकों से नहीं, बल्कि की-बोर्ड से भी हो सकते हैं। आज साइबर आतंकवाद तकनीकी रूप से अत्यंत विकसित रूप ले चुका है, इसमें राष्ट्र समर्थित हैकर्स, उग्रवादी समूह और संगठित साइबर अपराधी शामिल हैं। वे रैनसमवेयर, फ़िशिंग, डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल ऑफ सर्विस अटैक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित दुष्प्रचार जैसे आधुनिक उपकरणों का उपयोग करते हैं।

भारत में साइबर आतंकवाद की स्थिति : भारत, दुनिया के सबसे बड़े इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में से एक है। यहां बैंकिंग, रक्षा, रेलवे, शिक्षा और सरकारी सेवाएं सब डिजिटल हो चुकी हैं लेकिन यही डिजिटल निर्भरता साइबर हमलों के खतरे को भी बढ़ाती है। भारत पर कई बार ऐसे हमले हुए हैं जिनमें विदेशी हैकरों या आतंकवादी संगठनों का हाथ माना गया है। सरकार ने इस खतरे को पहचानते हुए कई कदम उठाए हैं जैसे सीईआरटी-इन (कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल), राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा नीति और साइबर अपराध जांच प्रकोष्ठ की स्थापना।

साइबर आतंकवाद के प्रकार और तकनीकें -

- ◆ **हैकिंग :** बिना अनुमति किसी सिस्टम या नेटवर्क में प्रवेश कर डाटा चुराना या नष्ट करना। उदाहरण के रूप में सरकारी डाटाबेस में सेंध लगाकर रक्षा जानकारी लीक करना।
- ◆ **डिस्ट्रीब्यूटेड डिनायल ऑफ सर्विस अटैक :** किसी वेबसाइट या सर्वर को भारी ट्रैफिक भेजकर ठप कर देना। उदाहरण के रूप में एस्टोनिया पर वर्ष 2007 का हमला।
- ◆ **रैनसमवेयर :** सिस्टम को लॉक कर देना और उसे खोलने के लिए फिरौती मांगना। उदाहरण के रूप में वना क्राय अटैक (2017) जिसने 150 देशों को प्रभावित किया।
- ◆ **फ़िशिंग और सोशल इंजीनियरिंग :** लोगों को झांसा देकर उनका निजी डाटा या पासवर्ड निकलवाना।
- ◆ **वेबसाइट डिफेसमेंट और प्रोपेगेंडा :** वेबसाइट हैक कर उस पर भड़काऊ या झूठी जानकारी डालना।
- ◆ **डाटा चोरी और जासूसी :** गुप्त सरकारी या कॉरपोरेट सूचनाएं चोरी करना।

साइबर आतंकवाद का भारतीय बैंकिंग प्रणाली पर प्रभाव : आज के डिजिटल युग में बैंकिंग प्रणाली पूरी तरह से तकनीक पर निर्भर हो गई है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल लेन-देन ने लोगों के जीवन को आसान बना दिया है लेकिन इसके साथ ही साइबर आतंकवाद का खतरा भी बढ़ गया है। साइबर आतंकवाद का मतलब है, इंटरनेट के माध्यम से बैंकिंग सिस्टम को नुकसान पहुंचाना। जैसे कि डाटा चोरी, बैंक सर्वर को हैक करना या ग्राहकों की निजी जानकारी चोरी करना। भारत में कई बार बैंकिंग सेक्टर को निशाना बनाया गया है जिससे करोड़ों रुपये का नुकसान हुआ है।

इसका सबसे बड़ा असर ग्राहकों के विश्वास पर पड़ता है। जब किसी बैंक का डाटा लीक होता है या किसी ग्राहक का पैसा चोरी होता है तो लोग डिजिटल बैंकिंग से डरने लगते हैं। इससे बैंक की छवि खराब होती है और ग्राहक पारंपरिक तरीकों की ओर लौटने लगते हैं। इसके अलावा, बैंकों को साइबर सुरक्षा पर भारी खर्च करना पड़ता है। उन्हें नए-नए सुरक्षा सॉफ्टवेयर, फायरवॉल और एन्क्रिप्शन तकनीकों का इस्तेमाल करना पड़ता है जिससे बैंकिंग सेवाओं की लागत बढ़ जाती है। सरकार और रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया ने इस खतरे को गंभीरता से लिया है। उन्होंने बैंकों को साइबर सुरक्षा के लिए गाइडलाइंस दी हैं और समय-समय पर ऑडिट भी कराया जाता है। साइबर आतंकवाद, भारतीय बैंकिंग प्रणाली के लिए एक गंभीर चुनौती है। इससे निपटने के लिए तकनीकी सुरक्षा के साथ-साथ ग्राहकों को भी जागरूक करना जरूरी है।

भारत में साइबर आतंकवाद के उदाहरण : भारत, जो सबसे तेज़ी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, साइबर आतंकवाद का प्रमुख निशाना भी है। इसके कुछ प्रमुख उदाहरण इस प्रकार हैं -

- 1) **26/11 मुंबई हमला (2008) :** 26 नवंबर, 2008 को जब मुंबई पर आतंकवादी हमला हुआ तो उसमें भी साइबर तकनीक का दुरुपयोग हुआ था। हमलावरों ने गूगल मैप और वॉयस ओवर इंटरनेट प्रोटोकॉल के जरिए संपर्क बनाए रखा। पाकिस्तान से संचालित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा ने इंटरनेट आधारित कॉल और जीपीएस सिस्टम का उपयोग कर रणनीति तय की थी। यह उदाहरण दिखाता है कि आज आतंकवादी तकनीक का किस हद तक प्रयोग कर रहे हैं।

2) **भारतीय बैंकों पर हमला (2016)** : 2016 में भारत के करीब 32 लाख डेबिट कार्ड के डाटा लीक हुए थे। यह हमला मैलवेयर के जरिए एटीएम नेटवर्क पर किया गया। इससे एसबीआई, आईसीआईसीआई, एचडीएफसी जैसे बड़े बैंकों को भारी नुकसान हुआ। यद्यपि सरकार ने त्वरित कार्रवाई कर सिस्टम को सुधार लिया परंतु यह भारत के बैंकिंग ढांचे के लिए बड़ा झटका था।

3) **कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट पर हमला (2020)** : कोविड महामारी के समय चीन से जुड़े हैकर समूहों ने भारत के कई सरकारी सर्वरों को निशाना बनाया। कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट की वेबसाइट पर साइबर हमला हुआ जिससे कार्यों में बाधा पड़ी। यह हमला भारत-चीन तनाव के दौरान हुआ था, जब डिजिटल जासूसी की गतिविधियां बढ़ी थीं।

4) **एम्स दिल्ली पर रैनसमवेयर अटैक (2022)** : दिल्ली स्थित एम्स के सर्वर पर बड़ा साइबर हमला हुआ था। हमले के कारण लाखों मरीजों का डाटा लॉक हो गया और अस्पताल की ऑनलाइन सेवाएं ठप पड़ गईं। जांच में पता चला कि यह रैनसमवेयर हमला था और हैकर्स ने डाटा अनलॉक करने के लिए पैसे की मांग की। यह घटना साबित करती है कि साइबर आतंकवाद अब स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों तक पहुंच चुका है।

5) **भारतीय रेलवे पर डाटा लीक (2023)** : भारतीय रेलवे के यात्री डाटा को डार्क वेब पर बिक्री के लिए डाल दिया गया था। यह हमला देश की डिजिटल संरचना पर गंभीर प्रश्न उठाता है कि साइबर सुरक्षा को और मजबूत करने की आवश्यकता है।

विश्व के प्रमुख साइबर आतंकवाद के उदाहरण : विश्व के विभिन्न देशों में साइबर आतंकवाद के कुछ प्रमुख घटनाएं इस प्रकार हैं-

1) **अमेरिका में 9/11 के बाद साइबर जासूसी** : 9/11 के बाद अल-कायदा जैसे संगठन इंटरनेट के माध्यम से फंडिंग और प्रचार करने लगे। उन्होंने ई-मेल एन्क्रिप्शन और ऑनलाइन ट्रांजेक्शन सिस्टम का दुरुपयोग किया।

2) **उत्तर कोरिया का "वानाक्राय आक्रमण" (2017)** : यह दुनिया का सबसे बड़ा रैनसमवेयर हमला था। इसमें 150 देशों के 2 लाख से ज्यादा कंप्यूटर प्रभावित हुए। अस्पताल, बैंक, रेलवे ठप हो गए। ब्रिटेन की "एनएचएस" स्वास्थ्य सेवा को बड़ा नुकसान हुआ।

3) **रूस-यूक्रेन साइबर युद्ध (2022)** : रूस ने यूक्रेन पर हमला करने से पहले ही साइबर हमलों के जरिए कई सरकारी वेबसाइटों और पावर ग्रिड ठप कर दिए। यह साबित करता है कि अब युद्ध केवल सीमा पर नहीं बल्कि "कंप्यूटर स्क्रीन" पर भी लड़े जा रहे हैं।

एक्स, फेसबुक, टेलीग्राम जैसे प्लेटफॉर्म अब केवल संवाद के साधन नहीं, बल्कि आतंकियों के प्रचार और भर्ती के उपकरण बन गए हैं। झूठी खबरें और अफवाहें फैलाकर चुनावों या समाज को प्रभावित किया जाता है। इसलिए आज का साइबर आतंकवाद केवल "हैकिंग" तक सीमित नहीं, बल्कि "माइंड कंट्रोल" का हथियार भी बन गया है। उदाहरणतः आइएसआइएस ने एन्क्रिप्टेड ऐप्स और वीडियो का उपयोग कर युवाओं को भड़काया।

नागरिकों की भूमिका: सिर्फ सरकार ही नहीं, हर नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह साइबर आतंकवाद से बचाव में अपना योगदान दे। इसके लिए आवश्यक है कि वे -

- ◆ मजबूत पासवर्ड रखें और उन्हें बार-बार बदलें।
- ◆ संदिग्ध लिंक या ईमेल पर क्लिक न करें।
- ◆ एंटीवायरस सॉफ्टवेयर हमेशा अपडेट रखें।
- ◆ सोशल मीडिया पर सीमित जानकारी साझा करें।
- ◆ साइबर अपराध की रिपोर्ट cybercrime.gov.in पर करें।
- ◆ वीपीएन और सुरक्षित नेटवर्क का उपयोग करें।
- ◆ बच्चों को ऑनलाइन सुरक्षा के प्रति जागरूक करें।

साइबर आतंकवाद आज के दौर की अदृश्य युद्धनीति बन चुका है। यह किसी भी देश की सीमाओं में बंधा हुआ नहीं है बल्कि पूरे डिजिटल संसार के लिए खतरा है। जहाँ पहले युद्ध बंदूक और बम से लड़े जाते थे, वहीं आज की लड़ाई "की-बोर्ड" और "कोड" से लड़े जा रहे हैं। भारत जैसे विशाल और डिजिटल रूप से विकसित देश को इस खतरे से निपटने के लिए सशक्त साइबर सुरक्षा तंत्र, जन-जागरूकता और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। यदि हम समय रहते कदम नहीं उठाएंगे तो आने वाले समय में साइबर आतंकवाद डिजिटल विनाश का कारण बन सकता है। इसलिए हर नागरिक, संस्था और सरकार का दायित्व है कि वह डिजिटल दुनिया में सुरक्षा, सतर्कता और जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़े।

-वरिष्ठ प्रबंधक

प्रधान कार्यालय निरीक्षण विभाग, दिल्ली

MoU SIGNED WITH BSF



Bank Signed MoU with BSF for the CAPF Salary Package, Gaurav Bachat. The MoU was signed by Shri Vijay Kumar Thapliyal (IG Adm), BSF And Shri Gopal Krishan (General Manager)

ENTREPRENEURSHIP AWARENESS PROGRAMME



Entrepreneurship Awareness Program was organised by Rural Self Employment Training Institute, Faridkot

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

बैंक के विभिन्न आंचलिक कार्यालयों द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर सतर्कता रैली, वॉकथॉन, नुक्कड़ नाटक, विद्यालयों एवं अन्य संस्थाओं में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया।



क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, चंडीगढ़



आंचलिक कार्यालय दिल्ली-II



आंचलिक कार्यालय देहरादून



आंचलिक कार्यालय पंचकुला



आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम



आंचलिक कार्यालय दिल्ली-I



CIRCULAR ISSUED FROM

Date	Circular No.	Subject
HO Accounts & Audit Department		
31/12/2025	897/2025-26	Closure of Trading Window
10/12/2025	808/2025-26	Perquisite valuation for the 2025-26
27/10/2025	655/2025-26	Amendments in GST provisions considered applicable to Bank
HO Credit Department		
27/10/2025	660/2025-26	PSB Scheme on Bill Discounting / Negotiation under Inland Letter of Credit
HO Credit Monitoring & Policy Department		
8/12/2025	795/2025-26	Policy on Valuation of Property/Assets Charged/Mortgaged or to be charged to the Bank as Primary and/or Collateral Security
1/12/2025	773/2025-26	Extending Trade Relief Measures to the Eligible Borrowers whose business is Impacted by Trade Disruptions Caused by Global Headwinds under the Reserve Bank of India (Trade Relief Measures) Directions, 2025.
29/11/2025	764/2025-26	Clarification regarding Services of Empanelled State Level Agencies as Techno-Economic Viability (TEV) Consultants and Lenders' Independent Engineers (LIE) in Bank.
7/11/2025	690/2025-26	Renewal of Export Credit Insurance for BANKS (ECIB) (WT-PC & WT-PS) issued by ECGC to our BANK for the year 2025-26.
10/10/2025	610/2025-26	Empanelment of Technical Partners/Agency as Techno-Economic Viability (TEV) Consultants/Lenders' Independent Engineers (LIE) in Bank
HO Foreign Exchange Department		
31/12/2025	902/2025-26	NOTIONAL RATES w.e.f. 01-01-2026
1/12/2025	774/2025-26	Advisory on RBI'S foreign Exchange Management (EXPORT OF GOODS AND SERVICES) (SECOND AMENDMENT) REGULATIONS, 2025
27/10/2025	657/2025-26	Advisory on Foreign Currency Payment within INDIA- COMPLIANCE WITH FEMA Guidelines
10/10/2025	596/2025-26	RBI Master Direction – Liberalized Remittance Scheme (LRS)
7/10/2025	593/2025-26	Master Direction – Import of Goods and Services
7/10/2025	592/2025-26	Master Direction – Export of Goods and Services
HO Fraud Monitoring Department		
6/12/2025	790/2025-26	Caution Advisory-Urgent Attention Required
6/12/2025	789/2025-26	SOP/Procedure to address fraud cases for prevention of re-occurrence
12/11/2025	705/2025-26	Advisory for Branches / Controlling offices on corrective measure for prevention of Operational Fraud
4/11/2025	684/2025-26	Advisory for Branches,Zone/Offices to prevent Fraud occurrence
HO General Administration Dept.		
15/12/2025	825/2025-26	Insurance Policy for i) Furniture & Fixture ii) Plant & Machinery iii) Computers iv) Bank Owned Premises.
5/12/2025	783/2025-26	Financial (CAPITAL AND REVENUE EXPENSES) powers of various functionaries of the Bank for NON-IT COMPONENTS
3/12/2025	777/2025-26	Change of Address of Branch Gurubagh, Varanasi (V0807)
11/11/2025	699/2025-26	Policy for Allocation of Bank's Vehicles to Executives of the Bank
HO Human Resources Development Department		
18/12/2025	836/2025-26	Separation of employee from banks' services during the month on November 2025.
8/12/2025	794/2025-26	Nomination for the post of Chairperson in National Dairy Development Board (NDDDB).
3/12/2025	780/2025-26	Holiday Home at SHIMLA
24/11/2025	749/2025-26	Scheme for reimbursement of fees for courses offered by Apex Institutes and Ed-tech platforms
20/11/2025	737/2025-26	Launch of online portal for booking of HOLIDAY HOME
19/11/2025	735/2025-26	Digitization of Clean Overdraft facility through HRMS.
18/11/2025	728/2025-26	Scheme for extending Clean Overdraft/ Demand Term Loan to staff members
14/11/2025	720/2025-26	Display of Plates with Employee Name and Role on Employee Desks
4/11/2025	682/2025-26	PSB Officers' Promotion Policy - addendum
30/10/2025	673/2025-26	Categorization of Courses / Certifications for Purpose of Qualification Marks in Promotion Process
15/10/2025	626/2025-26	A. Competent authorities to accord or deny "Permission of investigation (U/s 17-A) or Sanction of prosecution (U/s 19) under the PC Act, 1988 B. Competent authorities to be consulted before lodging of complaint/FIR against Staff/ Ex-Staff
15/10/2025	25/2025-26	Amendment in Schedule of Competent Authorities empowered for Suspension/deemed suspension and revocation of Suspension/deemed suspension of Officers employees and Workmen employee/Award Staff of Bank – Reg.
13/10/2025	614/2025-26	Banks Code of Ethics

01.10.2025 TO 31.12.2025

Date	Circular No.	Subject
HO IT Department		
26/12/2025	871/2025-26	Delegation of Financial Power related to IT for capital and Revenue Expenditure.
HO Inspection Department		
14/11/2025	719/2025-26	Advisory regarding proper scrutiny & closure of OMU alerts.
17/10/2025	632/2025-26	Formation of Preventive Vigilance Committee.
HO Law & Recovery Department		
14/11/2025	724/2025-26	Advisory regarding redemption of mortgaged property under SARFAESI ACT.
7/11/2025	94/2025-26	Compliance of "MAINTENANCE AND WELFARE OF PARENTS AND SENIOR CITIZEN ACT, 2007", as systemic improvements to safeguard banks' interest.
23/10/2025	645/2025-26	Policy on settlement of claims in respect of deceases customers.
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग		
24/11/2025	748/2025-26	राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत शाखाओं, कार्यालयों को अधिसूचित करना।
24/11/2025	746/2025-26	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में कार्यालय प्रमुख की उपस्थिति।
HO Provident Fund Department		
10/12/2025	807/2025-26	Anubhav Portal for Anubhav write up submission
6/10/2025	587/2025-26	Assistance in Education & Medication for Handicapped / Spastic children of Staff Members Scheme through HRMS
1/10/2025	578/2025-26	Special Scheme for Granting Loan to Ex-Staff pensioner / Family Pensioners of Punjab & Sind Bank to pay premium for IBA's Group Medical Insurance Policy for 2025-26
HO Planning & Development Department		
31/12/2025	895/2025-26	PSB Shubh Aarambh Current Account.
26/12/2025	872/2025-26	Guidelines pertaining to Branch Visits by the Zonal Head/ZO Executives (Scale - IV and Above)
20/12/2025	844/2025-26	Renaming of HO Planning & Development Department to Strategy Department
20/12/2025	843/2025-26	Clarification for Rate of interest waiver in "PSB Shikshak SB Salary Account"
19/12/2025	840/2025-26	Merger of Branch
12/12/2025	820/2025-26	Guidelines for Premature Closure of PSB Tax Saver FD- Introduction of 'TAXEMP' Menu in Finacle X.
10/11/2025	697/2025-26	Opening of new Branches
10/11/2025	693/2025-26	Introduction of Saving deposit Product "PSB Shikshak SB Salary Account".
28/10/2025	62/2025-26	Implementation of Revised Nomination Rules
HO Priority Sector Advances Department		
24/12/2025	852/2025-26	E- Vishwakarma Scheme
18/12/2025	838/2025-26	PSB Scheme for financing Food and Agro Processing Units
18/12/2025	837/2025-26	PSB Business Loan for Young India - Modification
2/12/2025	781/2025-26	Clarification on CenMarg Sanctioning Authority for Single-Officer Branches
24/11/2025	745/2025-26	Issuance of the Performance Bank Guarantee at a Concessional Commission rate of 40 BPS (0.40 Per Annum) - In Rice Sheller Cluster in Selected States.
7/11/2025	692/2025-26	Follow-Up of SOP's DILIGENTLY FOR e-NWR pledged stocks
29/10/2025	666/2025-26	360° Verification of Customer Profile into the Loan Origination System (LOS).
23/10/2025	647/2025-26	Bank's Policy for Financing Rice Sheller - Modifications
HO Retail Lending Department		
18/12/2025	835/2025-26	Advisory on EMPANELLED GOLD VALUERS
21/11/2025	803/2025-26	Amendment in Guidelines of PSB APNA GHAR PREMIUM
15/11/2025	723/2025-26	Introduction of New Apna Vahan Variant - APNA VAHAN PREOWNED CAR
HO General Operations Department		
25/11/2025	796/2025-26	Distribution of Payout Received from RBI under "Scheme for Facilitating Accelerated Payout – Inoperative Accounts and Unclaimed Deposits" as Branch Development Fund.
19/11/2025	797/2025-26	Revised Operational Guidelines under Depositor Education and Awareness (DEA) Fund Scheme, 2014.
10/11/2025	695/2025-26	SOP for incorporation of 21 recognized disability categories in CBS Finacle
16/10/2025	627/2025-26	Scheme for Facilitating Accelerated Payout – Inoperative Accounts and Unclaimed Deposits

HAPPY MOMENTS WITH WINTER CARNIVAL





ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ
(ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਕਾ ਉਪਕਰਮ)



Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है

Where service is a way of life

BACHAT JO UGAYE AAPKA KAL



Free Primary
Healthcare
(Clinics - Offline &
online)*



Unlimited doctor
tele-consultations.



Waiver of NEFT/RTGS/
IMPS/SMS charges*.



Higher interest
rates with Flexi
FDR.*

PSB Krishak Savings Account

* T&C apply



<https://punjabandsindbank.co.in>

e-mail: ho.customerexcellence@psb.co.in



1800 419 8300 (Toll Free)

Follow us @PSBIndOfficial

